Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष- 9
अंक-9-10

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

18-25 शाबान 1445 हिज्री कमरी, 29-07 अमान 1403 हिज्री शम्सी, 29-07 मार्च 2024 ई.

अल्लाह तआला का आदेश

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡۤا اِذَا لَقِيۡتُمۡ فِئَةً فَاثۡبُتُوۡا وَاذۡكُرُوا اللّٰهَ كَثِيۡرًا لَّعَلَّكُمۡ تُفۡلِحُوۡنَ

(अन्फ़ाल : 46)

(अनुवाद) : हे वे लोगों जो ईमान लाए हो। जब भी किसी दल से तुम्हारा मुक़ाबला हो तो डटे रहो और अत्यधिक अल्लाह को याद करो ताकि तुम सफल हो जाओ।

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

ख़ुत्बः जुमअः

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पवित्र मुख से ख़ून टपक रहा था। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ख़ुद अपना ख़ून पोंछते जाते थे और यह फ़रमाते जाते थे कि كَيۡفَ يُفۡلِحُ قَوۡمٌ شَجُّوۡا نَبِيَّهُمۡ وَ كَسَرُوۡا رَبَاعِيَتَهٗ وَهُوَ يَدۡعُوۡهُمۡ اِلَى اللّٰهِ वह क़ौम कैसे कामयाब हो सकती है

जिसने अपने नबी को घायल किया और उसका चौथा दाँत तोड़ डाला जबकि वह उन्हें अल्लाह तआला की ओर बुलाता है

अचानक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हज़रत साद बिन माज़ रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत साद बिन उबादह रज़ियल्लाहु अन्हो के मध्य से प्रकट हुए और हमने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की चाल से आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को पहचान लिया। उस वक़्त हमारी ख़ुशी का कोई ठिकाना नहीं था और ऐसा लगता था जैसे न हमें कोई शिकस्त हुई और न हमारा कोई नुक़्सान हुआ। जब सब मुस्लमानों ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को देख और पहचान लिया तो वे आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के गर्द परवानों की तरह एकत्र हो गए

एक वक़्त तो ऐसा भी आया कि 12 भी नहीं केवल तीन आदमी रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इर्द-गिर्द रह गए और कुफ़्फ़ार ने विशेषतः रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर तीर-अंदाज़ी शुरू कर दी लेकिन बावजूद इन नाज़ुक हालात के आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बराबर दुश्मन के मुक़ाबला में खड़े रहे और अपने स्थान से नहीं हिले

हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हो नीचे बैठ गए और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उनके ऊपर पैर रख कर चट्टान पर चढ़े। हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि मैंने उस वक़्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को यह कहते हुए सुना कि तल्हा ने अपने ऊपर जन्नत अनिवार्य कर ली

जंग में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को पहुंचने वाली तकालीफ़ और सहाबा कराम रिज़वानुल्लाह अलैहिम की जाँनिसारी क़ुर्बानियों का ईमान अफ़रोज़ वर्णन

फ़िलिस्तीन के मज़लूमीन के लिए दुआ की पुनः तहरीक तथा मुस्लमानों को एक उम्मत बनने की तलक़ीन

अब ये मुस्लमान मुल्कों का हाल हो गया है कि बजाय इसके कि इकट्ठे हो के फ़िलिस्तीन को बचाने की फ़िक्र करें ख़ुद मुस्लमानों ने लड़ना शुरू कर दिया है और पाकिस्तान और ईरान में भी अब सुना है सन्नाटा शुरू हो गया है। एक दूसरे पर उन्होंने बम भी मारे हैं। तो यह ख़तरनाक सूरत--ए-हाल पैदा हो रही है। अल्लाह तआला ही इन मुस्लमान मुल्कों को, लीडरों को अक़्ल और समझ अता फ़रमाए। उनके लिए भी दुआ करें। अल्लाह तआला हक़ीक़त में उनको अपने उद्देश्य को समझने की तौफ़ीक़ दे और एक उम्मत बनने वाले हों

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के नवासे श्रीमान सय्यद मौलूद अहमद साहिब पुत्र श्रीमान सय्यद दाऊद मुज़फ़्फ़र शाह साहिब और श्रीमान अकमीद आग मुहम्मद साहिब सदर जमाअत महदी आबाद, डोरी रीजन बुर्कीना फासो का वर्णन और नमाज़-जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 19 जनवरी 2024 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشۡهَدُ أَنۡ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحۡدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشۡهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبۡدُهٗ وَ رَسُوۡلُهٗ۔ أَمَّا بَعۡدُ فَأَعُوۡذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيۡطٰنِ الرَّجِيۡمِ۔ بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ۔ اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ۔ اَلرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ۔ مٰلِكِ يَوۡمِ الدِّيۡنِ ۔اِيَّاكَ نَعۡبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسۡتَعِيۡنُ۔ اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ ۔صِرَاطَ الَّذِيۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَيۡهِمۡ ۔ غَيۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَيۡهِمۡ وَلَا الضَّآلِّيۡنَ

जंग-ए-उहद के बारे में वर्णन हो रहा है इस विषय में और वर्णन करूँगा जैसा कि वर्णन हुआ था कि दुश्मन ने ऐलान किया कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम शहीद हो गए हैं। जिसने भी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की शहादत की ख़बर पसिद्ध की थी जब मुस्लमानों ने यह सुनी तो मुस्लमानों की हालत क्या हुई?

इसके विस्तार में वर्णन हुआ है कि जब इब्ने कय्यमा ने यह समझा कि उसने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को शहीद कर दिया है और उसने घोषणा कर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

दी कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) शहीद हो गए हैं और यह भी कहा जाता है कि घोषणा करने वाला शैतान था जो जुआल या जुईल बिन सुराका की शक्ल में था।

जुआल आरंभिक नेक मुस्लमानों में से थे और सफ़ा वालों में भी शामिल थे। उनका नाम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ख़ंदक़ के अवसर पर तबदील करके उम्र रख दिया था। बहरहाल यह सुन कर लोग जुआल पर लपके कि उन्हें क़तल कर दें परंतु उन्होंने इस मुनादी से बरात का इज़हार किया। उन्होंने कहा मैंने तो कोई ऐलान नहीं किया।और खव्वात बिन जुबैर और अबू बुर्दह ने गवाही दी कि जब यह मुनादी हुई तो वह उनके पास और पहलू में क़िताल कर रहे थे। उन्होंने गवाही दी कि यह तो मेरे साथ मिल के दुश्मन के साथ लड़ रहे थे। यह भी कहा जाता है कि ऐलान करने वाला अज़ब्बुल अकाबा था जिसने तीन मर्तबा ऐलान किया कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम शहीद हो गए हैं और इस बारे में कई कथन है कि यह ऐलान किस ने किया था। मुम्किन है मुख़्तलिफ़ लोगों ने मुख़्तलिफ़ तौर पर देखा हो। मुख़्तलिफ़ लोगों ने किया हो अर्थात इब्ने कय्यमा ने, इबलीस और अज़ब्बुल् अकबा में से हर एक ने ऐलान किया हो। कोई शैतान फ़िलत इन्सान भी यह ऐलान कर सकता है।

इस ख़बर के फैलते ही मुस्लमानों में से कुछ ने कहा कि अब जबकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम शहीद हो गए हैं तो तुम अपनी क़ौम के पास लौट चलो वे तुम्हें अमान देंगे। इस पर कुछ दूसरे लोगों ने कहा कि अगर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम शहीद हो गए हैं तो क्या तुम अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दीन और इस के पैग़ाम के लिए नहीं लड़ोगे यहां तक कि तुम अपने रब के हुज़ूर शहीद हो कर हाज़िर हो?

हज़रत साबित बिन दहादह रज़ियल्लाहु अन्हो ने अंसार से कहा कि : हे अंसार के गिरोह अगर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम शहीद हो गए हैं तो अल्लाह तआला ज़िंदा है और उसे मौत नहीं आ सकती। अपने दीन के लिए क़िताल करो। अल्लाह तआला तुम्हें फ़तह-ओ-कामरानी अता करने वाला है।

यह सुनकर अंसारी मुस्लमानों का एक गिरोह उठा और उन्होंने हज़रत साबित रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ मिलकर मुशरेकीन के इस गिरोह पर हमला कर दिया जिस में ख़ालिद बिन वलीद, इक्रमा बिन अबू जहल और अम्र बिन आस और ज़िरार बिन ख़त्ताब थे। मुस्लमानों की इस छोटी सी जमाअत को हमला करते हुए देख कर ख़ालिद बिन वलीद ने उन पर सख़्त जवाबी हमला किया और साबित बिनदहादः रज़ियल्लाहु अन्होऔर उनके अंसारी साथियों को शहीद कर दिया।

(अल् सीरतुल हल्बिया भाग 2 पृष्ठ 489 से 490 दारुल मारूफ़ बैरूत लुबनान 2012 ई.)

अब्तरी की इस कैफ़ीयत के बारे में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में जो लिखा है वह इस तरह है। कहते हैं कि

"इस वक़्त मुस्लमान तीन हिस्सों में बटे थे। एक गिरोह वह था जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की शहादत की ख़बर सुनकर मैदान से भाग गया था परंतु यह गिरोह सबसे थोड़ा था। इन लोगों में हज़रत उस्मान बिन अफ़्फान रज़ियल्लाहु अन्हो भी शामिल थे। परंतु जैसा कि क़ुरआन शरीफ़ में वर्णन आता है इस वक़्त के ख़ास हालात और उन लोगों के दिल्ली ईमान और इख़लास को मद्द-ए-नज़र रखते हुए अल्लाह तआला ने उन्हें माफ़ फ़र्मा दिया। इन लोगों में से कुछ मदीना तक जा पहुंचे और इस तरह मदीना में भी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़्याली शहादत और लश्कर इस्लाम की हज़ीमत की ख़बर पहुंच गई जिस से समस्त शहर में एक कुहराम मच गया और मुस्लमान मर्द, औरतें, बच्चे, बूढ़े निहायत सीधापन की हालत में शहर से बाहर निकल आए और उहद की तरफ़ रवाना हो गए और कुछ तो जल्द जलद दौड़ते हुए मैदान-ए-जंग में पहुंचे और अल्लाह का नाम लेकर दुश्मन की सफ़ों में गए।" अर्थात उन्होंने जंग शुरू कर दी। "दूसरे गिरोह में वे लोग थे जो भागे तो नहीं थे परंतु आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की शहादत की ख़बर सुन कर या तो हिम्मत हार बैठे थे और या अब लड़ने को बेकार समझते थे और इस लिए मैदान से एक तरफ़ हट कर सिर झुका कर बैठ गए। तीसरा गिरोह वह था जो बराबर लड़ रहा था। उनमें से कुछ तो वे लोग थे जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इर्दगिर्द जमा थे और बे नज़ीर जाँनिसारी के जोहर दिखा रहे थे और अक्सर वे थे जो मैदान-ए-जंग में मुंतशिर तौर पर लड़ रहे थे।

इन लोगों और तथा दूसरे गिरोह के लोगों को जूं जूं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ज़िंदा मौजूद होने का पता लगता जाता था ये लोग दीवानों की तरह लड़ते भिड़ते आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इर्द-गिर्द जमा होते जाते थे।

इस वक़्त जंग की हालत यह थी कि क़ुरैश का लश्कर गोया समुंद्र की गहरी लहरों की तरह चारों तरफ़ से बढ़ा चला आता था और मैदान-ए-जंग में हर तरफ़ से तीर और पत्थरों की बारिश हो रही थी। जान निसारों ने इस ख़तरा की हालत को देख कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इर्द-गिर्द घेरा डाल कर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के जिस्म मुबारक को अपने बदनों से छिपा लिया परंतु फिर भी जब कभी हमला की रो उठती थी तो ये चंद गिनती के आदमी इधर उधर धकेल दिए जाते थे और ऐसी हालत में बाज़-औक़ात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम क़रीबन अकेले रह जाते थे। किसी ऐसे ही अवसर पर हज़रत साद बिन अबी वक्कास रज़ियल्लाहु अन्हो के मुशरिक भाई उत्बा बिन अबी वक्कास का एक पत्थर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के चेहरा मुबारक पर लगा जिससे आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का एक दाँत टूट गया और होंट भी घायल हुआ। अभी ज़्यादा वक़्त नहीं गुज़रा था कि एक और पत्थर जो अब्दुल्लाह बिन शहाब ने फेंका था उसने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के माथे को घायल किया और थोड़ी देर के बाद तीसरा पत्थर जो इब्ने कय्यमा ने फेंका था आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बालों पर आकर लगा जिससे आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के कवच की दो कड़ियाँ आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बालों में चुभ कर रह गईं। साद बिन अबी वक्कास रज़ियल्लाहु अन्हो को अपने भाई उत्बा के इस फ़ेअल पर इस क़दर ग़ुस्सा था कि वह कहा करते थे कि मुझे कभी किसी दुश्मन के क़तल के लिए इतना जोश नहीं आया जितना मुझे उहद के दिन उत्बा के क़तल का जोश था।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो पृष्ठ 493-494)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो एक जगह दुआ की क़बूलीयत की फ़िलासफ़ी का मज़मून वर्णन कर रहे हैं और यह बयान करते हुए आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने एक लंबी तफ़सील के साथ उहद के इस वाक़िया का भी वर्णन किया है

आप रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि "मैंने जो यह कहा कि अगर अंग्रेज़ क़ौम सच्चे दिल से तौहीद पर क़ायम हो कर मुझसे दुआ की दरख़ास्त करे तो उसे फ़तह हासिल होगी यह 1940 ई. में दूसरी जंग-ए-अज़ीम के वक़्त की बात है। बहरहाल आप रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि अगर ये लोग मुझ से दुआ की दरख़ास्त करें तो उनको फ़तह हासिल होगी। "यह ख़ुदा तआला की भविष्यवाणी, उस के कलाम और मेरे स्वपन के ऐन मुताबिक़ है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस क़ौम के लिए बहुत दुआएं की हैं परंतु इन क़ौमों ने ख़ुदा तआला के तख़्त पर एक बंदे को बिठाया हुआ है इस लिए ख़ुदा तआला उनको इबतेलाओं में डाल है।" अर्थात हज़रत-ए-ईसा को ख़ुदा का बेटा बनाया हुआ है। इसलिए ये लोग इबतेला में पड़े हुए हैं। दुआएं उनके लिए बड़ी हुई हैं। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने पैग़ामियों का वर्णन किया कि "पैग़ामी इंकार करें तो बे-शक करें" अर्थात पैग़ामियों का नज़रिया इस से मुख़्तलिफ़ है जो हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन फ़र्मा रहे हैं। बहरहाल आप रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि "परंतु हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उनके विषय में जो दुआएं की हैं उनके क़बूल होने में रोक उनका शिर्क ही है अगर ये रोक थोड़ी यअ पूरी दूर हो जाए तो ये दुआएं फ़ौरन क़बूलियत का जामा पहन लेंगी। मैंने कई स्वपन ऐसे देखे हैं कि मेरी दुआओं से उनकी मुसीबतें टल सकती हैं परंतु इसका यह मतलब नहीं कि मैं जो दुआ करता हूँ वे ज़रूर क़बूल होती है। अगर मेरे इख़तेयार में ये बात होती तो मैं इन तकलीफों को ही क्यों न टाल देता जो ख़ुद हमें आती हैं। क़ुरआन-ए-करीम में है कि कुफ़्फ़ार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से कहते थे कि अगर तुम ख़ुदा तआला के इतने ही महबूब हो तो क्यों तुम्हारा अमुक काम नहीं हो जाता परंतु अल्लाह तआला फ़रमाता है कि हे मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! उनसे कह दे कि अगर मेरे इख़तेयार की बात होती तो मैं सब भलाई अपने ही लिए न जमा कर लेता?

अतः अगर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के लिए यह क़ानून नहीं था कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हर दुआ क़बूल हो "तो मेरे लिए क्योंकर हो सकता है? जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के लिए भी यही क़ानून था कि जब ख़ुदा तआला दुआ क़बूल करने के लिए तैयार हो और किसी निशान के ज़रीया आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की इज़्ज़त क़ायम करना चाहे तो वे ज़रूर क़बूल कर लेता। तो मेरे लिए या किसी और के लिए उसके ख़िलाफ़ क्योंकर हो सकता है? मैं तस्लीम करता हूँ कि अंग्रेज़ों की ताक़त में है कि चाहें तो हमें फांसी दे दें या क़ैद कर दें। हालाँकि उस वक़्त वे दुश्मन के मुक़ाबला में कमज़ोर नज़र हैं" जंग-ए-अज़ीम में इस वक़्त उनका काफ़ी बुरा हाल था। "परंतु बावजूद उसके मेरा दावा है कि मेरी दुआ से उनकी मुश्किलात दूर हो सकती हैं क्योंकि अंग्रेज़ों का हमारी जानों पर तसर्रुफ़ और

क़ानून के अधीन है और इस बारे में दुआ की क़बूलियत एक और क़ानून के मातहत है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को पकड़ने के लिए ईरान के बादशाह ने इरादा किया था परंतु अभी पकड़ने वाले न आए थे। सिर्फ पैग़ाम लेकर यमन के गवर्नर के आदमी पहुंचे थे परंतु आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनसे फ़रमाया कि जाओ अपने आक़ा से कह दो कि हम नहीं आते। तुम्हारे ख़ुदा को हमारे ख़ुदा ने मार दिया। अल्लाह तआला ने इस बादशाह के लड़के को तहरीक की और उसने अपने बाप को मार दिया। परंतु उहद की जंग में दुश्मन ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर हमला किया, पत्थर मारे, आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दाँत टूट गए, सिर घायल हो गया और खोद की कीलें सिर में खुब गईं। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बेहोश हो कर गिर पड़े और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ऊपर कुछ और घायल साहबा रज़ियल्लाहु अन्हो गिरे और साहबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने ख़्याल कर लिया कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम शहीद हो गए।

अब कोई कहे कि अगर अल्लाह तआला को आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की इतनी इज़्ज़त मंज़ूर थी कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़ातिर ईरान के बादशाह को इतनी दूर मरवा दिया तो उस ने उहद के मैदान में काफ़िरों को आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को इस तरह पत्थर क्यों मारने दिए? तो यह आरोप दरुस्त नहीं। यह अल्लाह तआला की मस्लिहतें और हिकमतें होती हैं। यह राज़ हैं। कुछ अवसरों पर वे थोड़ी सी बात पर पकड़ लेता है। काई दफ़ा किसी मस्लिहत के मातहत ढील देता है ता इन्सान की बेबसी और बेसर-ओ-सामानी ज़ाहिर हो।"

(ख़ुत्बात-ए-महमूद भाग 21 पृष्ट 227 से 229 ख़ुत्बा जुमा फ़र्मूदा 5 जुलाई 1940 ई.)

बहरहाल यह वाक़िया चल रहा है क़तल की अफ़्वाह के बाद फिर साहबा रज़ियल्लाहु अन्हो को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का अचानक दीदार भी हुआ।

इस की तफ़सील में लिखा है कि हज़रत अबू ऊबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो वे पहले शख़्स हैं जिन्हों ने इस वक़्त सबसे पहले रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को पहचाना कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ज़िंदा सलामत मौजूद हैं।

हज़रत अबू ऊबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि मैंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की आँखों की वजह से पहचाना जो कवच के नीचे से रोशन और मुनव्वर नज़र आ रही थीं।

कवच वह ख़ौल होता है जो जंग के वक़्त सिपाही सिर और चेहरे की हिफ़ाज़त के लिए ओढ़ता है। बहरहाल कहते हैं मुझे आँखों में बड़ी चमक और रोशनी नज़र आर ही थी। मुझे पता लग गया कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ज़िंदा हैं। उद्देश्य मैंने जैसे ही आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को पहचाना तो पूरी ताकत से चलाया कि :

हे मुसलमानो तुम्हें ख़ुशख़बरी हो यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मौजूद हैं। इस वक़्त आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मेरी तरफ़ इशारा करके मुझे रोका कि ख़ामोश रहो।

(सीरतुल हल्बिया भाग 2 पृष्ठ 320 दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत)

(सीरतुल हल्बिया (अनुवादक भाग 2 पृष्ठ 179 प्रकाशन दारुल ईशाअत कराची)

एक दूसरी रिवायत में है कि सबसे पहले एक और सहाबी थे जिन्हों ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को पहचाना। इसलिए एक मुसन्निफ़ लिखता है कि गढ़े में गिरने के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का समस्त जिस्म मुबारक ख़ून से तर-ब-तर था। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम निकले तो हज़रत काब बिन रज़ियल्लाहु अन्हो ने कवच के बीच ही से आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की आँखों से आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को पहचान लिया और ख़ुशी से सदा बुलंद करने लगा। يَا مَعْشَرَ الْمُسْلِمِينَ، أَبْشِرُوا هٰذَا رَسُولُ اللهِ हेमुसलमानो के गिरोह! ख़ुश हो जाओ यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हैं। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन्हें ख़ामोश रहने का इशारा फ़रमाया लेकिन मुस्लमानों को जैसे जैसे सूचना मिलती गई सब आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तरफ़ लपकते हुए आए।

उनमें हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत उम्र बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो ,हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत तलहा बिन ऊबेदुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम रज़ियल्लाहु अन्हो ,हज़रत हारिस बिन सिमा रज़ियल्लाहु अन्हो और अन्य मुस्लमान भी थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपने इन सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो के हमराह जबल-ए-उहद की एक घाटी में पनाह गज़ीन हुए। रास्ते में दुश्मनों ने जितने भी हमले किए अस्हाब-ए-रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनका ख़ूब दंदान शिकन जवाब दिया।

(दायरा मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम भाग 6 पृष्ठ 537 मकतबा दारुल मारूफ़ लाहौर)

कुछ कुतुब में है कि जंग का पाँसा पलट जाने की वजह से सूरत-ए-हाल नाज़ुक और न-गुफ़्ता हो गई थी।

अचानक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हज़रत साद बिन माज़ रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत साद बिन उबादह रज़ियल्लाहु अन्हो के मध्य से प्रकट हुए और हमने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की चाल से आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को पहचान लिया। उस वक़्त हमारी ख़ुशी का कोई ठिकाना नहीं था और ऐसा लगता था जैसे न हमें कोई शिकस्त हुई और न हमारा कोई नुक़्सान हुआ। जब सब मुस्लमानों ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को देख और पहचान लिया तो वे आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के गर्द परवानों की तरह जमा हो गए।

और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम इन सबको लेकर एक घाटी की तरफ़ रवाना हुए। उस वक़्त आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ,हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत हारिस बिन समा रज़ियल्लाहु अन्हो थे।

(सीरतुल हल्बिया भाग 2 पृष्ट 320 दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन फ़रमाते हैं कि :

"मुस्लमानों के लिए यह हमला चूँकि बिल्कुल ग़ैर मुतवक़्क़े था इस लिए उन पर सख़्त घबराहट तारी हो गई और बाज्जाह बिखरे हुए होने के दुश्मन का मुक़ाबला न कर सके। मैदान पर कुफ़्फ़ार ने क़बज़ा कर लिया और अक्सर साहबा रज़ियल्लाहु अन्हो व्याकुलता और चिंता की हालत में मदीना की तरफ़ भाग पड़े यहां तक कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के गर्द सिर्फ 12 साहबा रज़ियल्लाहु अन्हो रह गए और एक वक़्त तो ऐसा भी आया कि 12 भी नहीं सिर्फ तीन आदमी रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इर्द-गिर्द रह गए और कुफ़्फ़ार ने विशेषतः रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर तीर-अंदाज़ी शुरू कर दी लेकिन बावजूद इन नाज़ुक हालात के आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बराबर दुश्मन के मुक़ाबला में खड़े रहे और अपने मुक़ाम से नहीं हिले।

अततः सहसा दुश्मन ने रेला कर दिया और वह चंद आदमी भी धकेले गए और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम घायल हो कर एक गढ़े में गिर गए। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर कुछ और साहबा रज़ियल्लाहु अन्हो जो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हिफ़ाज़त कर रहे थे शहीद हो कर गिर गए और इस तरह रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम थोड़ी देर के लिए सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो की निगाहों से ओझल हो गए और लश्कर में यह अफ़्वाह फैल गई कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम शहीद हो गए हैं। यह ख़बर साहबा रज़ियल्लाहु अन्हो के लिए और भी परेशानकुन साबित हुई और उनकी रही सही हिम्मत भी जाती रही। जो साहबा रज़ियल्लाहु अन्हो उस वक़्त आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के गर्द मौजूद थे और ज़िंदा थे उन्होंने लाशों को हटा कर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को गढ़े में से निकाला और हिफ़ाज़त के लिए आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इर्द-गिर्द खड़े हो गए।"

(तफ़सीर-ए-कबीर भाग 9 पृष्ठ 77)

जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मुशरिकों के घेरे से निकल कर अपने जाँनिसारों के साथ घाटी की तरफ़ जा रहे थे तो उस्मान बिन अब्दुल्लाह बिन मुग़ीरा एक स्याह और सफ़ैद घोड़े पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तरफ़ बढ़ा। वह सिर से पैर तक कवच पहने था और इस घाटी की तरफ़ बढ़ रहा था जहां रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम जा रहे थे। वह कह रहा था कि या तो वह ज़िंदा रहेंगे या मैं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उसकी आवाज़ सुनकर ठहर गए। उस वक़्त उस्मान के घोड़े को इन गढ़ों में से एक से ठोकर लगी (जो वहां गढ़े खोदे थे) और वे इस में गिर पड़ा। उस वक़्त हज़रत हारिसा बिन सिम्मा रज़ियल्लाहु अन्हो की तरफ़ झपटे। थोड़ी देर दोनों में तलवारों के वार हुए। अचानक हज़रत हारिस बिन सिम्मा रज़ियल्लाहु अन्हो ने उस के पांव पर तलवार मारी। उस्मान इस ज़ख़्म से एक दम बैठ गया। उस वक़्त हज़रत हारिस बिन सिम्मा रज़ियल्लाहु अन्हो ने उस का काम तमाम कर दिया और उस की ज़िरह और कवच उतार लिया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह देखकर फ़रमाया : ख़ुदा का शुक्र है कि जिसने उसको हलाक कर दिया। उसी वक़्त उबैदुल्लाह बिन जाबिर आमरी ने हज़रत हारिस रज़ियल्लाहु अन्हो पर हमला किया और उनके कंधे पर वार करके उन्हें घायल कर दिया। हज़रत हारिस

रज़ियल्लाहु अन्हो के साथी उन्हें उठा कर ले गए। साथ ही हज़रत अबू दुजान रज़ियल्लाहु अन्हो ने लपक कर उबैदुल्लाह पर हमला किया और उसे अपनी तलवार से क़तल करके वापस रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास गए।

(सीरतुल हल्बिया भाग 2 पृष्ठ 321 दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत)

मक्का के एक रईस उबय्यबन खलफ का आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम प रहमला करने का भी वर्णन मिलता है।

जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम घाटी की तरफ़ जा रहे थे तो उबय्यबन खलफ इधर आ गया। उबय्यबन खलफ ने ग़ज़ व-ए-बदर में क़ैदी बनने का फ़िदया अदा किया था। उसने कहा कि मेरे पास ऊद घोड़ा है जिसे में हर-रोज़ एक फर्क अर्थात साढ़े सात किलो मकई खिलाता हूँ। बहुत ताक़तवर है और बड़ा सेहत मंद है। मैं इस पर सवार हो कर मुहम्मद (सल्लल्लाहो वसल्लम) को क़तल करूंगा। जब आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तक उस की यह बात पहुंची तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने नहीं! बल्कि मैं उसे क़तल करूँगा। एक क़ौल यह है कि उसने ये बात हिज्रत से क़बल मक्का श्रीमती में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से की थी। अल-ग़ र्ज़जब ग़ज़व-ए-उहद हुआ तो हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो से फ़रमाया कि मुझे अंदेशा है कि उबय बिन खलफ मेरे पीछे से मुझ पर हमला-आवर होगा। जब तुम उसे देखो तो मुझे बता देना। वह ज़िरह पहने हुए घोड़े को रक़्स कराता आ रहा था। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने भी उसे देख लिया। वह कह रहा था कि मुहम्मद (मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो वसल्लम) कहाँ हैं? अगर वे बच गए तो मैं नहीं बच सकूँगा। हज़रत मसअब बिन उमेर रज़ियल्लाहु अन्हो उसके सामने आ गए। वह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का बचाव कर रहे थे। मसअब बिन उमेर रज़ियल्लाहु अन्हो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का बचाव कर रहे थे। उसने मसअब बिन उमेर रज़ियल्लाहु अन्हो को शहीद कर दिया। सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ की हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! अबी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तरफ़ आ रहा है। अगर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पसंद करें तो हम में से एक शख़्स उसका काम तमाम कर दे। दूसरी रिवायत में है कि सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो उसके सामने आगए। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : उसे छोड़ दो। इस के रास्ते से हट जाओ। जब वे आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के क़रीब हो गया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : कज़्ज़ाब! भाग कर कहाँ जाता है? हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत हारिसा बिन सिम्मा रज़ियल्लाहु अन्हो से नेज़ा लिया। दूसरे कथन के मुताबिक़ हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम रज़ियल्लाहु अन्हो से नेज़ा लिया। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने झुरझुरी ली। सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से यूं परे हो गए जैसे ऊंट की कमर से मक्खियां दूर हो जाती हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अबी के सामने आए उसकी गर्दन पर नेज़ा मारा या कवचऔर ज़िरह के मध्य नज़र आने वाली जगह पर नेज़ा मारा जिसकी वजह से वह अपने घोड़े से कई बार नीचे लुढका। वह बैल की तरह डकारने लगा। उस की गर्दन पर मामूली सी ख़राश आई उस का ख़ून रुक गया या उस की पसलियों में से कोई पिसली टूट गई। वह अपनी क़ौम के पास वापिस गया और कहा बख़ुदा मुझे मुहम्मद अरबी (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने क़तल कर दिया है। क़ौम ने कहा तेरा दिल टूट गया है, बख़ुदा तुझे कुछ नहीं हुआ। यह मामूली ख़राश ही है अगर हम में से किसी की आँख पर भी उतना ज़ख़म आता तो इसको कुछ भी न होता। उसने कहा कि मुझे लात और उज़्ज़ा की क़सम! जो चोट मुझे लगी है अगर ज़ुल मज़ाज वालों या रबीआ और मुज़र् के क़बायल को लगती तो सारे मर जाते। उसने मुझे मक्का श्रीमती में कहा था अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कि मैं तुझे क़तल करूँगा।

बख़ुदा अगर वह अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मुझ पर थूक भी देता तो मैं मर जाता। जब मुशरेकीन वापस आ रहे थे तो ये सिर्फ़ के स्थान पर जहन्नुम में दाख़िल हो गया।

सिर्फ एक बड़ी वादी है। आजकल जिस को नव्वारिय्या कहते हैं। हज्जतुल विदा में मदीना से यह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सातवीं मंज़िल थी जो तन्ईम के क़रीब मक्का से नौ या दस मील की दूरी पर है।

(सबलुल् हुदा वल् रिशाद भाग 4 पृष्ठ 208 दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत)
(सीरत इन्साईक्लो पीडीया भाग 6 पृष्ठ 274 दारुस्सलाम)
(फ़र्हंग सीरत पृष्ठ 147 प्रकाशन ज़व्वार अकैडमी कराची)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने लिखा है कि :

"जब क़ुरैश ज़रा पीछे हट गए और जो मुस्लमान मैदान में मौजूद थे वे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को पहचान कर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इर्दगिर्द जमा हो गए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपने इन साहबा रज़ियल्लाहु अन्हो की जमईयत में आहिस्ता-आहिस्ता पहाड़ के ऊपर चढ़ कर एक महफ़ूज़ दर्रा में पहुंच गए। रास्ते में मक्का के एक रईस उबय्य बिन ख़लफ़ की नज़र आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर पड़ी और वे द्वेष और दुश्मनी में अंधा हो कर ये शब्द पुकारता हुआ आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तरफ़ भागा कि" "لَا نَجَوْتُ اِنْ نَجَا।"कि अगर मुहम्मद (सल्लल्लाहो वसल्लम) बच कर निकल गया तो गोया मैं तो नहीं बच्चा।' साहबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने उसे रोकना चाहा परंतु आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया। उसे छोड़ दो और मेरे क़रीब आने दो। और जब वह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर हमला करने के ख़्याल से आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के क़रीब पहुंचा तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने एक नेज़ा लेकर इस पर एक वार किया जिससे वह चक्कर खा कर ज़मीन पर गिरा और फिर उठ कर चीख़ता चलाता हुआ वापस भाग गया और गो बज़ाहिर ज़ख़म ज़्यादा नहीं था परंतु मक्का पहुंचने से पहले वह मर गया।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत
साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो पृष्ठ 497)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ घाटी में पहुंचे। इस के बारे में इब्न-ए-इसहाक़ का वर्णन है कि

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की शहादत के ऐलान और कुछ लोगों के मुंतशिर हो जाने के बाद सबसे पहले रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर हज़रत काब बिन रज़ियल्लाहु अन्हो की निगाह पड़ी। उनका वर्णन है कि मैंने कवच के मध्य में से आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की चमकती हुई आँखें देखकर बुलंद आवाज़ से पुकारा। मुसलमानो! ख़ुश हो जाओ। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ये हैं। यह सुनकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हाथ से इशारा किया कि ख़ामोश रहो।

जब मुस्लमानों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को पहचान लिया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के हमराह घाटी की तरफ़ रवाना हुए। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत तल्हा बिन अबैदुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम रज़ियल्लाहु अन्हो और हारिस बिन सिमा रज़ियल्लाहु अन्हो वग़ैरा सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो थे।

(तारीख़ अल्तिबरी भाग 2 पृष्ठ 67 दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत)

जबकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम साहबा रज़ियल्लाहु अन्हो की जमात के साथ इस चट्टान पर क़ियाम फ़र्मा थे अचानक क़ुरैश की एक जमाअत पहाड़ के ऊपर पहुंच गई। इस जमाअत में ख़ालिद बिन वलीद भी थे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने दुश्मन को ऊपर देखकर दुआ की कि :

اَللّٰهُمَّ إِنَّهُ لَا يَنْبَغِي لَهُمْ أَنْ يَعْلُوْنَا. اَللّٰهُمَّ لَا قُوَّةَ لَنَا إِلَّا بِكَ.

हे अल्लाह उनके लिए जायज़ नहीं कि वे हम पर ग़ालिब आएं। हे अल्लाह हमारी ताक़त नहीं है परंतु केवल तेरे ही ज़रीया

इसी वक़्त हज़रत उम्र फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने मुहाजेरीन की एक जमाअत के साथ उन लोगों का मुक़ाबला किया और उन्हें पीछे धकेल कर पहाड़ी से नीचे उतरने पर मजबूर कर दिया।

(सीरतुल हल्बिया भाग 2 पृष्ठ 323 दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत)
(सिबलुल् हुदा भाग 4 पृष्ठ 210 प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत)

सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में वर्णन हुआ है कि :

"जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम दर्राह पर पहुंच गए तो क़ुरैश के एक दस्ते ने ख़ालिद बिन वलीद की कमान में पहाड़ पर चढ़ कर हमला करना चाहा लेकिन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के हुक्म से हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने चंद मुहाजेरीन को साथ लेकर उस का मुक़ाबला किया और उसे पराजय कर दिया।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ादा
मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो पृष्ठ 497)

इसी जंग के वाक़िया की एक रिवायत एक तारीख़ में इस तरह मिलती है कि हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उहद के दिन दो ज़िरहें पहने हुए थे।

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने चट्टान पर चढ़ना चाहा परंतु कवच के वज़न की वजह से और सिर और चेहरे पर चोट से ख़ून बहने की वजह से आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को कमज़ोरी हो गई थी तो चट्टान पर चढ़ न सके तो।

हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हो नीचे बैठ गए और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उनके ऊपर पैर रख कर चट्टान पर चढ़े। हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि मैंने उस वक़्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को यह कहते हुए सुना कि तल्हा ने अपने ऊपर जन्नत वाजिब कर ली।

(ओसोदुल गाबा भाग 3 पृष्ठ 85 दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत)

एक रिवायत में आता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने चट्टान के ऊपर जाने का इरादा किया जो घाटी पर थी परंतु जब आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम चढ़ने लगे तो सिर मुबारक के ज़ख़्म से ख़ून निकल जाने और कमज़ोरी की वजह से ताक़त ने साथ नहीं दिया। फिर उसके साथ आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के जिस्म पर दो ज़िरहों का बोझ था। देख कर हज़रत तल्हा बिन अबैदुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो जलदी से आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सामने बैठ गए और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को काँधों पर बिठा कर चट्टान के ऊपर ले गए। उसी वक़्त आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : तल्हा के इस नेक अमल की वजह से उनके लिए जन्नत वाजिब हो गई।

(सीरतुल हल्बिया भाग दोम आधे से आख़िर पृष्ठ 181 अनुवादक दारुल इशाअत कराची)

जैसा कि वर्णन हुआ है कि इसी जंग में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का दाँत मुबारक भी शहीद हुआ था

उस वक़्त का जो नक़्शा हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने खींचा है इस के मुताल्लिक़ हज़रत आयश रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि :

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो जब यौम-ए-उहद का वर्णन करते तो फ़रमाते वे दिन सारे का सारा तलहा का था। फिर उसकी तफ़सील बताते कि मैं इन लोगों में से था जो उहद के दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तरफ़ वापिस लौटे थे तो मैंने देखा कि एक शख़्स रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हिफ़ाज़त करते हुए लड़ रहा है। रावी कहते हैं कि मेरा ख़्याल है कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया, अर्थात हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि वह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को बचा रहा था। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि मैंने कहा! काश तल्हा हो। मुझ से जो मौक़ा रह गया सो रह गया और मैंने दिल में कहा कि मेरी क़ौम में से कोई शख़्स हो तो यह मुझे ज़्यादा पसंदीदा है। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उस वक़्त यह सोचा। कहते हैं मेरे और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मध्य एक शख़्स था जिस को मैँ नहीं पहचान सका हालाँकि मैं इस शख़्स की निसबत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ज़्यादा क़रीब था और वह इतना तेज़ चल रहा था कि मैं इतना तेज़ न चल सकता था तो देखा कि वह शख़्स अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ियल्लाहु अन्हो थे। अर्थात दो बंदे ये थे। हज़रत तलहा रज़ियल्लाहु अन्हो भी वहां थे और उबैदा बिन जर्रा रज़ियल्लाहु अन्हो भी थे, फिर मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास पहुंचा। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का निचला चौथा दाँत, सामने वाले दो दाँतों और नोकीले दाँत के मध्य वाला दाँत टूट चुका था और चेहरा घायल था। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के रुख़्सार मुबारक में कवच की कड़ियाँ धँस चुकी थीं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : तुम दोनों अपने साथी की मदद करो। इस से आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मुराद तल्हा थी और उनका ख़ून बहुत बह रहा था। हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हिफ़ाज़त करते हुए बहुत ज़्यादा घायल हो गए थे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने बजाय यह कहने के कि मुझे देखो फ़रमाया कि तल्हा को जाके देखो। हमने उनको रहने दिया और मैं आगे बढ़ा अर्थात हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हो की तरफ़ तवज्जा नहीं दी बल्कि हमने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तरफ़ तवज्जा दी ताकि कवच की कड़ीयों को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के चेहरा मुबारक से निकाल सकें। इस पर हज़रत अबू ऊबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि मैं आपको अपने हक़ की क़सम देता हूँ कि आप उसे मेरे लिए छोड़ दें। अतः मैंने उनको छोड़ दिया। हज़रत अबू ऊबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो की दरख़ास्त पर कि मैं निकालूँगा यह कड़ियाँ आप पीछे हट गए। हज़रत अबू ऊबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो ने नापसंद किया कि इन कड़ीयों को हाथ से खींच कर निकालें और इस से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को तकलीफ़ पहुंचे तो उन्होंने इन कड़ीयों को अपने मुँह से निकालने की कोशिश की और एक कड़ी को निकाला तो कड़ी के साथ उनका अपना सामने का दाँत भी टूट गया। फिर दूसरी कड़ी निकालने के लिए मैं आगे बढ़ा कि मैं भी ऐसा ही करूँ जैसा उन्होंने किया है। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि मैंने सोचा कि मैं भी इसी तरह दूसरी कड़ी निकालने की कोशिश करता हूँ तो हज़रत अबू ऊबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो ने फिर कहा कि मैं आपको अपने हक़ की क़सम देता हूँ कि आप उसे मेरे लिए छोड़ दें। अर्थात दूसरी कड़ी भी मैं ही निकालूँगा, आप नहीं। उन्होंने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को कहा था तो फिर वह पीछे हट गए। फिर उन्होंने वैसे ही किया जैसे पहले किया था। अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हो का सामने का दूसरा दाँत भी कड़ी के साथ टूट गया और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाया करते थे कि अबू ऊबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो सामने के टूटे हुए दाँतों वाले लोगों में सबसे ज़्यादा सुंदर थे।

फिर हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ईलाज मुआलिजा से फ़ारिग़ हो कर तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हो के पास आए। वह एक गढ़े में थे तो देखा कि उनके जिस्म पर नेज़े, तलवार और तीरों के कम-ओ-बेश सत्तर ज़ख़्म थे और उनकी उंगली भी कटी हुई थी तो हमने उनकी मरहम पट्टी की।

(सब्लुल् हुदा भाग 4 पृष्ठ 199-200 दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत)

(लुगातूल् अल्हदीस रूबाई शब्द कर अंतर्गत)

हज़रत अबू ऊबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो के इलावा हज़रत उक्बा बिन वहब् और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के बारे में भी रिवायत मिलती है कि उन्होंने यह कड़ियाँ निकालीं।

(शरह जरक़ानी भाग 2 पृष्ठ 425 दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत)

लेकिन बहरहाल पहली रिवायत ज़्यादा बेहतर है।

अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हो रिवायत करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के चेहरा मुबारक से दो कड़ियाँ जब निकाली गईं तो ख़ून ऐसे बहने लगा जैसे भरे हुए मश्कीज़े से पानी निकलता है। मालिक बन सिनान रज़ियल्लाहु अन्हो ख़ून को अपने मुँह से चूसने लगे। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनको कहा कि क्या तू ख़ून पी रहा है? उसने कहा कि जी हाँ। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : जिसके ख़ून को मेरा ख़ून छू गया उस को आग नहीं छुएगी।

(सबलुल् हुदा वल् रिशाद भाग 4 पृष्ठ 200 दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत)

यह "सिबलुल् हुदा वल् रिशाद की रिवायत है लेकिन लगता है कि यह रिवायत काबिल-ए-ग़ौर है। उनकी कुछ रिवायतें महल-ए-नज़र हैं। बहरहाल अल्लाह बेहतर जानता है कहाँ तक यह सही है क्योंकि अगर ख़ून इस तरह चूसें तो इस तरह ख़ून रुकने के बजाय उनसे और ज़्यादा ख़ून निकलता है और ज़्यादा कमज़ोरी पैदा होती है। बहरहाल मेरा ख़्याल हैकि अगली रिवायात में इस का जवाब भी आ जाता है। इसलिए यह रिवायत इतनी मज़बूत सका नहीं है।

ग़ज़वा ए उहद में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को जो ज़ख़्म लगे इस हवाले से बुख़ारी की रिवायत है कि हज़रत सहल बिन साद रज़ियल्लाहु अन्हो से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ज़ख़्म के विषय में पूछा गया तो उन्होंने कहा कि मुझ से पूछते हो तो अल्लाह की क़सम मैं ख़ूब जानता हूँ, सब कुछ मेरी आँखों के सामने है अर्थात वह नज़ारा कि कौन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का ज़ख़्म धो रहा था और कौन पानी डाल रहा था और क्या दवा लगाई गई थी। हज़रत सहल रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बेटी हज़रत फातमा रज़ियल्लाहु अन्हो ज़ख़्म धो रही थीं और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ढाल में से पानी डाल रहे थे जब हज़रत फातमा रज़ियल्लाहु अन्हो ने देखा कि पानी ख़ून को और निकाल रहा है तो उन्होंने बोरी का एक टुकड़ा लिया और उस को जलाया और उस को साथ चिपका दिया। उस से ख़ून रुक गया और इस दिन आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सामने वाला दाँत भी टूट गया था और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का चेहरा घायल हो गया था और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का कवच आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सिर पर टूट गया था।

(सही अल् बुख़ारी किताब अल्मग़ाज़ी बाब ما اصاب النبی ﷺ من الجَرَّاح یوم اُحد हदीस : 4075)

यहां ख़ून को बंद करने और धोने का वर्णन है, चूसने का तो कोई वर्णन नहीं। यही रिवायत बुख़ारी की जो है यही सही है।

जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम घाटी के दहाने तक पहुंचे तो अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हो पानी से अपनी ढाल भर कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास लाए। मेहरास जबल उहद में जिन छोटे बड़े गढ़ों में बारिश का पानी जमा हो जाता है उन्ही गढ़ों का नाम मेहरास। मेहरास के अर्थत में यह लिखा हुआ है। यह जगह इस मुक़ाम के क़रीब है जहां हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो शहीद हुए थे ताकि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उस को पी लें लेकिन इस की बदबू की वजह से आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उस को नहीं पिया और

अपने चेहरे से ख़ून को धो लिया और अपने सिर पर डाला फ़रमाया :

अल्लाह तआला उस शख़्स पर सख़्त ग़ज़बनाक होता है जो उस के नबी के चेहरे को घायल कर दे।

मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ियल्लाहु अन्हो महिलाओं से पानी मांगने गए। उनके पास पानी नहीं था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को सख़्त प्यास लगी हुई थी तो मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ियल्लाहु अन्हो एक चश्मे पर गए और वहां से मीठा पानी लाए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने वह पानी पी कर उनको ख़ैर की दुआ दी। तिबरानी में सहल बिन साद रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का चेहरा उहद के दिन घायल हो गया और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दांत मुबारक शहीद हो गए और कवच रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सिर मुबारक पर टूट गया था। जब मुशरेकीन चले गए तो औरतें सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो के पास आएं। उनमें फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा भी थीं। वह जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को मिलें तो उनको चिमट गईं और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ज़ख़म धोने लगीं और अली रज़ियल्लाहु अन्हो ढाल के माध्यम से पानी बहाते थे लेकिन ख़ून ज़्यादा बह रहा था तो हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने चटाई का कुछ हिस्सा जला कर राख बना लिया और इस से ज़ख़म की टकोर की यहां तक कि वह ज़ख़म के साथ मिल गई और ख़ून बह गया।

(सबलुल् हुदा वल् रिशाद भाग 4 पृष्ठ 209-210 दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत)

(सीरतुल हल्बिया भाग 2 पृष्ठ 322 दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत)

(फ़र्हंग सीरत पृष्ठ 290 ज़व्वार अकैडमी कराची)

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के चेहरा मुबारक से ख़ून टपक रहा था। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ख़ुद अपना ख़ून पोंछते जाते थे और यह फ़रमाते जाते थे कि كَيْفَ يُفْلِحُ قَوْمٌ شَجُّوْا نَبِيَّهُمْ وَ كَسَرُوْا رَبَاعِيَتَهٗ وَهُوَ يَدْعُوْهُمْ إِلَى اللّٰهِ۔ वह क़ौम कैसे कामयाब हो सकती है जिसने अपने नबी को घायल किया और इस का चौथा दाँत तोड़ डाला जबकि वह उन्हें अल्लाह तआला की तरफ़ बुलाता है।

(सीरत इन्साईक्लो पीडीया भाग 6 पृष्ठ 251 दारुस्सलाम)

इन शा अल्लाह शेष आगे

फ़िलिस्तीन के लिए मैं दुआ के लिए कहता रहता हूँ।

अब मुस्लमान मुल्कों का यह हाल हो गया है कि बजाय इसके कि इकट्ठे हो के फ़िलिस्तीन को बचाने की फ़िक्र करें ख़ुद मुस्लमानों ने लड़ना शुरू कर दिया है और पाकिस्तान और ईरान में भी अब सुना है हंगामा शुरू हो गया है। उन्होंने एक दूसरे पर बम भी मारे हैं। तो यह ख़तरनाक सूरत-ए-हाल पैदा हो रही है। अल्लाह तआला ही इन मुस्लमान मुल्कों को, लीडरों को अक़ल और समझ अता फ़रमाए। उनके लिए भी दुआ करें। अल्लाह तआला हक़ीक़त में उनको अपने उद्देश्य को समझने की तौफ़ीक़ दे और एक-एक उम्मत बनने वाले हों नमाज़ के बाद मैं दो जनाज़े भी पढ़ाऊंगा। जनाज़ा ग़ायब एक है।

सय्यद मौलूद अहमद साहिब इबन सय्यद दाऊद मुज़फ़्फ़र साहिब का जो पिछले दिनों छहत्तर 76 वर्ष की आयु में वफ़ात पा गए थे। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन आप हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत सय्यदा उम्मे ताहिर साहब रज़ियल्लाहु अन्हो के नवासे और साहबज़ादी अम्तुल हकीम साहिबा और सय्यद दाऊद मुज़फ़्फ़र शाह साहिब के बेटे थे। अल्लाह के फ़ज़ल से मूसी थे। मेरे ख़ालाज़ाद भी थे और मेरी पत्नी के बड़े भाई थे।

उनके दादा सय्यद महमूदुल्ला शाह साहिब थे जो सय्यद अब्दुलसत्तार शाह साहब रज़ियल्लाहु अन्हो के बेटे थे। हज़रत डाक्टर सय्यद अब्दुलसत्तार शाह साहब रज़ियल्लाहु अन्हो में तक़्वा और तहारत बड़ा इंतेहा को पहुंचा हुआ था। उनमें बड़ी आजिज़ी और इनकेसारी थी और हुक़ूकुल्लाह और हुक़ूकुल-ईबाद की अदायगी में वह बहुत बढ़े हुए थे। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनके बारे में, अब्दुलसत्तार शाह साहब रज़ियल्लाहु अन्हो के बारे में एक रिवायत दर्ज की है। कहते हैं उन्होंने मुझे ख़ुद वर्णन किया है। अर्थात डाक्टर सय्यद अब्दुलसत्तार शाह साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत मियां बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो को ख़ुद वर्णन किया कि एक दफ़ा हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हो बहुत ज़्यादा बीमार हो गए और ये उस ज़माने की बात है जब वह हज़ूर के मकान में रहते थे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बकरों का सदक़ा दिया। डाक्टर साहब रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि मैं भी वहां मौजूद था। मैं रात को हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हो के पास रहा और दवा पिलाता रहा। सुबह जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए तो हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर डाक्टर साहिब सारी रात मेरे पास बेदार रहे और दवा इत्यादि एहतेमाम से पिलाते रहे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस बात पर बहुत ख़ुश हुए और फ़रमाने लगे कि : हमको भी उन पर रशक आता है। यह स्वर्गीय कुम्बा है।

और ये अलफ़ाज़ चंद-बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाए। हज़रत डाक्टर अब्दुलसत्तार शाह साहब रज़ियल्लाहु अन्हो के बारे में बार-बार फ़रमाए।

(माख़ूज़ अज़ सीरत अल्महदी भाग 1 हिस्सा सोम पृष्ठ 545 रिवायत नंबर : 563)

सय्यद मौलूद शाह साहिब ने रब्वाह से तालीम हासिल की। मैट्रिक किया। एफ़. एस.सी की। फिर उनको लाहौर में इंजनियरिंग यूनीवर्सिटी कॉलेज में दाख़िला मिला और मकैनीकल इंजनियरिंग में डिग्री हासिल की। पाकिस्तान में भी मुख़्तलिफ़ कंपनियों में काम किया। फिर चंद साल नाईजेरिया में भी एक कंपनी में बतौर इंजनियर काम करने गए थे और वहां काम किया और अल्लाह के फ़ज़ल से अच्छी ज़िंदगी गुज़ारी।

उनका निकाह हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् सालिस रहमहुल्लाह ने जब पढ़ाया था तो उस में हज़रत ख़लीफ़ सालिस रहमहुल्लाह तआला ने जो ख़ुतबा दिया वह यह था कि अज़दवाजी रिश्ते दरख़्त के पैवंद की भांति होते हैं जिन्हें शुरू में बड़ा सँभाल के रखना पड़ता है।

यह कुछ पुराने ख़ुतबात निकाह में इसलिए पढ़ देता हूँ कि बहुत सारे लोग सवाल करते हैं कि किस तरह हम अच्छे रिश्ते निभा सकते हैं? तो यह हिदायतें हैं, उन्हें सामने रखें। मुख़्तसर होती हैं। इसलिए काई दफ़ा मैं ख़ुतबे में वर्णन कर देता हूँ और कई दफ़ा निकाहों में यह साबिक़ा खलिफ़ा की हिदायात भी दे देता हूँ।

बहरहाल आप रहमहुल्लाह फ़रमाते हैं कि जिन्हें शुरू में ही बड़ा सँभाल के रखना पड़ता है।

क़ुरआन-ए-करीम की हिदायत के मुताबिक़ इस पैवंद को क़ौल-ए-सदीद के धागे से बांधना पड़ता है। अर्थात बिल्कुल सच्चाई, कामिल सच्चाई के धागे से बांधना पड़ता है तब जा कर उस की हिफ़ाज़त होती है।

और इस की ज़िम्मेदारी न सिर्फ हर दो मियां और बीवी पर बल्कि उनके ख़ानदानों पर, उनके माहौल पर, बल्कि उनके दोस्तों पर भी आयद होती है। क्योंकि बहुत सी ख़राबियां बदज़नियों के नतीजा में या चुग़लियों के नतीजा में या बेसबरी के नतीजा में या तैश के नतीजा में पैदा हो जाती हैं और इस को रोकने के लिए क़ौल-ए-सदीद एक बहुत ही मज़बूत धागा है।

फिर आप रहमहुल्लाह ने फ़रमाया कि ख़ुदा करे कि जिस निकाह का मैं इस वक़्त ऐलान कर रहा हूँ वह हर दो ख़ानदानों के लिए बाबरकत हो। फिर जमाअत के लिए बाबरकत हो। इन्सानियत के लिए बाबरकत हो। ख़ादिम दीन नसल इस में से पैदा हो। फिर आप रहमहुल्लाह ने फ़रमाया कि रिश्ता मेरी छोटी बहन अमतुल हकीम और सय्यद दाऊद मुज़फ़्फ़र शाह के बेटे सय्यद मौलूद अहमद का है जो डाक्टर सय्यद ग़ुलाम मुज्तबा की बेटी लुब्रा शाहवार से तै पा रहा है। फिर डाक्टर साहिब के बारे में भी आप रहमहुल्लाह ने फ़रमाया कि डाक्टर साहिब उन आरंभिक डाक्टरों में से हैं जिन्हों ने मग़रिबी अफ़्रीक़ा में बतौर वाक़िफ़-ए-डाक्टर काम किया और उनके हाथ में अल्लाह तआला ने बहुत शिफ़ा बख़शी। बड़े कामयाब सर्जन के तौर पर वह पहले गाना में काम करते रहे फिर कुछ अरसा के बाद उन्हें नाईजेरिया भेजा गया, वहां भी उन्होंने अपना आरिज़ी वक़्फ़ पूरा किया। फिर दिल की बीमारी में बीमार हो गए इस वजह से वापस लौटना पड़ा। फिर हज़रत ख़लीफ़ा सालिस रहमहुल्लाह ने उन्हें दुआ भी दी कि अल्लाह तआला उनको सेहत से रखे और उनको तौफ़ीक़ दे कि वह दुबारा अफ़्रीक़ा जाएं। और यह दुआ भी अल्लाह तआला ने क़बूल फ़रमाई। इस के बाद भी वह गए और एक लंबा अरसा दुबारा वहां अफ़्रीक़ा में उन्हें ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। फिर हज़रत ख़लीफ़ा सालिस रहमहुल्लाह ने यह दुआ भी की कि अल्लाह तआला सय्यद मौलूद अहमद को भी ख़िदमत-ए-दीन की तौफ़ीक़ दे। और अपने तौर पर जो सेवा भावना से ख़िदमत यह कर सकते थे उन्होंने उसके बाद की।

(उद्धृत ख़ुतबात-ए-नासिर भाग 10 पृष्ठ 656-657 ख़ुतबा निकाह 25 नवंबर 1977 ई.)

उनके बेटे सय्यद सऊद अहमद कहते हैं कि मेरे पिता शुरू से ही नमाज़ों के पाबंद, फ़ज्र की नमाज़ के बाद तिलावत करने वाले बल्कि मुझे पता है तहज्जुद गुज़ार भी थे। कहते हैं उनकी तिलावत भी बड़ी अच्छी आवाज़ में थी। फिर कहते हैं रात को सोने से पहले हमें पुराने बुज़ुर्गों के क़िस्से और वाक़ियात सुनाते थे। चंदों में बाक़ायदा थे और हमें भी चंदों में बाक़ायदा रहने की तलक़ीन किया करते थे। जेब ख़र्च भी देते तो कहते पहले चंदा दे के आओ। ईदी मिलती तो इस में भी कहते चंदा दिया करो। हर एक की अलैहदा अलैहदा फाईल बनाई हुई थी। इसी तरह जब बच्चों की भी वसीयत करवाई तो उनकी भी फाईल बनाई। अपना रिकार्ड भी रखा और हर चंदा स्वयं clear करते थे। रमज़ान के रोज़ों के अतिरिक्त शवाल के रोज़े भी रखने वाले थे। क़ुरआन-ए-करीम के दो दौर पूर्ण करते और तीसरे दौर को रमज़ान में ख़त्म करने की कोशिश करते।

फिर उन्होंने यह लिखा है कि बड़े खरे इन्सान थे। बहुत शफ़्फ़ाफ़ तबीयत के मालिक, सीधे, साफ़ बोलने वाले थे। बहुत मिलनसार थे। किसी से पुराना ताल्लुक़ होता या नया, ख़ुद संपर्क रखते और किसी न किसी बहाने हाल पूछते रहते। छोटा हो या बड़ा सबसे हुस्न-ए-सुलूक से पेश आते। अपने दिल में कभी किसी के बारे में कीना नहीं रखा। द्वेष नहीं था। कोई जितनी मर्ज़ी ज़्यादती कर जाता लेकिन आप हमेशा हुस्न-ए-खुल्क से पेश आते थे। अगर कोई बड़ी ज़्यादती कर जाता तो ख़ुद जा कर इस से संपर्क बनाते।

और ये बातें सिर्फ़ बेटे ने नहीं लिखें बल्कि मैं ने भी देखा है कि हक़ीक़त में ये खूबियां उनमें मौजूद थीं। मेरा भी यही मुशाहिदा है और बहुत से ताज़ियत करने वाले लोगों ने भी जो उनसे वाक़िफ़ थे, यह लिखा है कि वाक़ई ये खूबियां उनमें मौजूद थीं।

फिर बेटे ने ही यह लिखा है कि एक दफ़ा हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो कहीं बाहर सफ़र पर गए तो उनके लिए एक खिलौना उपहार लाए जिसको उन्होंने खोल के टुकड़े टुकड़े कर दिया। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन्हें कहा कि मैंने तुम्हें उपहार दिया है। तुमने उस के टुकड़े कर दिए हैं? तो कहने लगे कि मैं अभी जोड़ देता हूँ और फिर उस को हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के सामने जोड़ भी दिया। तो हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनकी वालिदा को कहा कि इस को इंजनीयर बनाना। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की यह बात भी पूरी हुई। बाद में वे इंजनीयर बन भी गए और बड़े अच्छे इंजनीयर थे।

फिर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की एक नसीहत जो सारों के लिए बड़ी काम वाली है इस को वर्णन कर देता हूँ

एक मर्तबा हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु अपने फ़ार्म जो सिंध में था वहां ज़मीनों पर गए हुए थे। यह भी उन दिनों में वहीं थे। यह भी अपने वालिद के हमराह हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ ही ज़मीनों का जायज़ा ले रहे थे। जब हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु दौरा कर रहे थे तो यह भी उनके साथ-साथ थे। तो उस वक़्त ग़ालिबन आमों के फल का सीज़न था और ठेकेदार ने बाग़ में फल तोड़ के नीचे रखे हुए थे। बाग़ का जो ठेका है वह दे दिया जाता है, बेच दिया जाता है और फिर वे फल ठेकेदार का होता है। कुछ जिन्स इस में से मालिक के लिए ली जाती है लेकिन बहरहाल उसने अपना फल तोड़ के रखा हुआ था। ये बच्चे थे उन्होंने इस में से एक आम उठा लिया। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि वापस रख के आओ। यह अब तुम्हारी मिल्कियत नहीं। यह ठेकेदार की मिल्कियत है।

तो हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की तर्बीयत के यह भी अंदाज़ थे। अब यह कह सकते थे कि हाँ जिन्स हमें मिलती है इस में से निकल जाएगा कोई हर्ज नहीं लेकिन नहीं अपने नवासे की आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस तरह तर्बीयत की।

फिर सय्यद मौलूद की बेटी अज़ीज़ा मारिया कहती हैं कि क़ुरआन-ए-करीम और रुहानी ख़ज़ायन और मल्फ़ूज़ात का नियमित अध्ययन रखते थे।

इसी तरह मुझे यह भी पता है कि तफ़सीर-ए-कबीर जो है इस का भी अध्ययन था और बड़ा गहरा ज्ञान था। लोगों में बैठ के अपने इलम को ज़ाहिर नहीं करते थे लेकिन अगर कोई पूछे, कहीं बात हो, मसला हो, तो बड़े अच्छे हवाले देते थे। औरों ने भी मुझे यह लिखा है।

दीनी और दुनियावी एतबार से कहती हैं जब भी हम कोई मसला पूछते तो अच्छा हल बताते थे। दुआओं की तरफ़ तवज्जा करने की तलक़ीन करते और बस यही कहते कि तुम दुआ करो और फिर मुआमला अल्लाह पर छोड़ दो।

अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए और उनकी बीवी बच्चों की हिफ़ाज़त करे और उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ दे।

उनके एक भाई सय्यद सुहैब हैं, उन्होंने भी यही लिखा है कि बड़ी ख़ूबी यह थी कि ग़मी या ख़ुशी का अवसर हो हमेशा यह मुबारकबाद देने में पहल करने वाले थे। अगर मरीज़ हो तो इयादत करने में सबसे पहले आते थे।

हनीफ़ महमूद साहिब मुरब्बी सिलसिला हैं। यह लिखते हैं इस्लामाबाद से उनसे परिचय हुआ। सादा, सफेदपोश, ख़ामोश तबा,दरवेश और फ़िरिश्तासिफ़त इन्सान थे और वाकफ़ीन-ए-ज़िंदगी, विशेषतः मुरब्बियान-ए-कराम का बहुत सम्मान करते थे। रब्वाह आए तो यहां भी इस ताल्लुक़ को निभाया जो इस्लामाबाद से क़ायम हुआ था। अक्सर तलाश करके मस्जिद में मिलते थे और कहते हैं जब भी उनको दुआ के लिए कहो तो दुआ के बाद उसका हाल अहवाल भी पूछा करते थे कि फिर क्या बना?

अल्लाह तआला यह नेकियां जैसा कि मैंने कहा है उनके बच्चों में भी जारी रखे।

दूसरा जनाज़ा जिसको पढ़ाना है उनका वर्णन यह है कि वह श्रीमान अकमीद आग मुहम्मद साहिब हैं।

यह सदर जमात महदी आबाद डोरी रीजन बुर्कीना फासो के हैं। पिछले दिनों पैंसठ 65 वर्ष की उम्र में उनकी वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। उनके पीछे रहने वालों में दो पत्नियाँ और दस बेटे और पाँच बेटियां शामिल हैं।

मिशनरी इंचार्ज साहिब लिखते हैं बड़े चाक-ओ-चौबंद थे। पिछले दिनों में वहां डोरी में गया था। शुहदा की फ़ैमिलियों को उनके घरों में ख़ुद सेट कर रहे थे। जमाअत ने शुहदा की फ़ैमिलियों को नए घर बना के दिए हैं, वहां उनको सेट कर रहे थे और फिर दो दिन बाद ही अपने घर गए और वहां बेहोश हो के गिर पड़े। शदीद हार्ट-अटैक हुआ और फिर उनकी वफ़ात हो गई।

1999 ई. में अहमदियत क़बूल करने की उनको सआदत मिली और अहमदी होने के बाद अल्हाज इबराहीम बदीगा (Bidiga) साहिब के पास महदी आबाद मुंतक़िल हो गए और अल्हाज इबराहीम बदीगा (Bidiga) साहिब के साथ क़रीबी दिहात में तब्लीग़ के लिए भी जाते थे। तब्लीग़ के नतीजा में बहुत सी जमाअतें उन्होंने क़ायम कीं। महकमा जंगलात में फ़ारसट गार्ड के नुमाइंदे के तौर पर गर्वनमैंट मुलाज़िम थे। वहां दहश्तगर्दी की वजह से फ़ारिग़ हो गए। फ़सल की कटाई होती, समस्त लोगों से अपनी फ़सल से ज़कात का हिस्सा अलग करवाते और सबकी ज़कात का हिसाब बना कर सैक्रेटरी माल को देते, रसीद कटवाते। पाँच साल बतौर सदर जमात महदी आबाद ख़िदमत की तौफ़ीक़ भी मिली। नरम और धीमे मिज़ाज के आदमी थे। कभी ग़ुस्सा नहीं करते जब 11 जनवरी 23 ई. को महदी आबाद में दहश्तगरदों ने हमला किया तो इस दिन यह मग़रिब की नमाज़ अदा करके घर जा चुके थे। इस वाक़िया के बाद अफ़राद-ए-जमाअत में बहुत ख़ौफ़-ओ-हिरास था और शहादतों की वजह से लोग बहुत निढाल भी थे। आपने उनको बहुत हौसला दिया। और फिर दुबारा जब मैं ने उनको कहा कि महदी आबाद के लोगों को डोरी शहर मुंतक़िल कर दें तो आपने बड़ी जाँ-फ़िशानी से ये सारे काम किए। लोगों को हौसला दिलाया और आबाद कारी दिलवाई। समस्त जमात के लोगों को अपनी निगरानी में डोरी मुंतक़िल करने के इंतेज़ामात किए और फिर वफ़ात तक इन सब शुहदा के ख़ानदानों की ज़रूरियात का ख़्याल रखते रहे।

राना फ़ारूक़ साहिब डोरी के मुबल्लिग़ हैं। कहते हैं कि नमाज़-ए-फ़ज्र के बाद रोज़ाना समस्त शुहदा की फ़ैमिलियों के पास सलाम करने जाते। ख़ैरीयत दरयाफ़त करते। उनका कोई मसला होता तो फ़ौरी हल करने की कोशिश करते। कहते हैं कि इस वक़्त डोरी में मुख़्तलिफ़ जमातों के आठ सौ के क़रीब प्रभावित लोग हैं जो वहां रह रहे हैं। इन सब का ख़्याल रखते। हर वक़त उनकी ख़िदमत के लिए तैयार रहते। नमाज़ों में बड़े बाक़ायदा, निज़ाम जमात से मुकम्मल सहयोग करने वाले और दूसरों को इस की तलक़ीन भी करते थे।

अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए, उनकी औलाद को भी, लवाहिक़ीन को भी सब्र और हौसला अता फ़रमाए। उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन।

★ ★ ★

ख़ुत्बः जुमअः

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की रहमत जो अल्लाह तआला के रंग में कामिल तौर पर रंगी हुई थी उस हालत में भी ग़ालिब आई जबकि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम घायल थे, ख़ून बह रहा था और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फिर यह दुआ की कि अल्लाह तआला का ग़ज़ब भड़कता है जब लोग उसके नबी पर ज़ुल्म करते हैं, उसके प्यारे पर ज़ुल्म करते हैं। लेकिन अल्लाह! यह ज़ुल्म जो कर रहे हैं यह अज्ञानता और बेवक़ूफ़ी की वजह से कर रहे हैं। उनको बख़श दे। उन पर उनकी ग़ल्तियों की वजह से अज़ाब नाज़िल न करना। اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی آلِ مُحَمَّدٍ क्या शफ़क़त और रहमत का प्रदर्शन है

जब आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को गढ़े से निकाला गया और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को होश आया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह ख़्याल ही नहीं किया कि दुश्मन ने मुझे घायल किया है। मेरे दाँत तोड़ दिए हैं और मेरे अज़ीज़ों और रिश्तेदारों और दोस्तों को शहीद कर दिया है बल्कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने होश में आते ही दुआ की कि رَبِّ اغْفِرْ لِقَوْمِیْ فَاِنَّھُمْ لَا یَعْلَمُوْنَ यह लोग मेरे स्थान को पहचान नहीं सके इसलिए तू इनको बख़श दे और इनके गुनाहों को माफ़ फ़र्मा दे।

जंग-ए-उहद में जो फ़रिश्ते दिखाई दिए उनके सिरों पर बतौर निशान सुर्ख़ पगड़ियाँ थीं। सुर्ख़-रंग में कुछ ग़म का पैग़ाम भी था क्योंकि जितना दुख साहबा रज़ियल्लाहु अन्हो को जंग-ए-उहद में आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ज़ख़मों की वजह से पहुंचा वैसा दुख आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सारी ज़िंदगी में कभी साहबा रज़ियल्लाहु अन्हो को नहीं पहुंचा। एक ग़म के बाद दूसरे ग़म की ख़बर उनको मिली और वे ग़मों से निढाल हो गए। अतः इस ग़ज़वा में फ़रिश्तों की अलामत के लिए भी एक ऐसा रंग चुना गया जिसमें ग़म और ख़ून और दुख का पहलू शामिल है

उस दिन हमने अनस बिन नज़र रज़ियल्लाहु अन्हो को इस हाल में पाया कि उनके जिस्म पर सत्तर ज़ख़मों के निशान थे और उनकी लाश को कोई नहीं पहचान सका सिवाए उनकी बहन के। उन्होंने उंगलियों के पौरों से उनको पहचाना

जंग में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को पहुंचने वाली तकालीफ़, फ़रिश्तों का नुज़ूल और सहाबा कराम रिज़वानुल्लाह अलैहिम की जाँनिसारी कुर्बानियों का ईमान अफ़रोज़ वर्णन

यमन के अहमदियों, मुस्लिम उम्मत तथा दुनिया के उमूमी हालात के लिए दुआ की तहरीक

आजकल यमन के अहमदियों के लिए भी दुआ करें वे आजकल काफ़ी मुश्किलात में गिरफ़्तार हैं। इसी तरह मुस्लिम उम्मत के लिए दुआ करें। अल्लाह तआला उनमें भी इकाई और वहदत पैदा करे और अक़ल और समझ दे। दुनिया के उमूमी हालात के लिए भी दुआ करें। बड़ी तेज़ी से जंग की तरफ़ बढ़ रही है। अल्लाह तआला रहम फरमाए।

श्रीमान हाफ़िज़ डाक्टर अब्दुल हमीद गामा साहिब नायब अमीर जमाअत सिएरा लियोन और श्रीमती ताहिरा नज़ीर बेगम साहिबा पत्नी श्रीमान चौधरी रशीदुद्दीन साहिब मुरब्बी सिलसिला का वर्णन और नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 26 जनवरी 2024 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को जंग में जो घाव पहुंचे थे उस की तफ़सील में कुछ रिवायात इस तरह हैं।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो की रिवायत के मुताबिक़ इस अवसर पर नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया اِشْتَدَّ غَضَبُ اللّٰهِ عَلٰی مَنْ قَتَلَهُ النَّبِیُّ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ اِشْتَدَّ غَضَبُ اللّٰهِ عَلٰی قَوْمٍ دَمَّوْا وَجْهَ نَبِیِّ اللّٰهِ। अल्लाह तआला का ग़ज़ब उस शख़्स पर सख़्त हो जाता है जिसे अल्लाह के नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अल्लाह के रास्ते में क़तल किया हो और अल्लाह तआला का ग़ज़ब उस क़ौम पर सख़्त हो जाता है जिसने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का चेहरा ख़ून से भर दिया हो।

तिबरानी की रिवायत है कि जब नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम घायल हुए तो फ़रमाया اِشْتَدَّ غَضَبُ اللّٰهِ عَلٰی قَوْمٍ کَلَّمُوْا وَجْهَ رَسُوْلِ اللّٰهِ इस अवसर पर अल्लाह का ग़ज़ब इंतेहाई सख़्त हो जाता है जिसने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पवित्र मुख को घायल किया। फिर थोड़ी देर रुक कर फ़रमाया اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِقَوْمِیْ فَاِنَّهُمْ لَا یَعْلَمُوْنَ हे अल्लाह मेरी क़ौम को बख़श दे क्योंकि वे नादान हैं।

सहीहेन की रिवायत में भी यही है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बार-बार फ़र्मा रहे थे اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِقَوْمِیْ فَاِنَّهُمْ لَا یَعْلَمُوْنَ हे अल्लाह मेरी क़ौम को बख़श दे क्योंकि वे नादान हैं।

(सीरत इन्साईक्लो पीडीया भाग 6 पृष्ठ 252-253 दारुस्सलाम रियाज़)

अतः आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की रहमत जो अल्लाह तआला के रंग में कामिल तौर पर रंगी हुई थी इस हालत में भी ग़ालिब आई जबकि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम घायल थे, ख़ून बह रहा था और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फिर यह दुआ की कि अल्लाह तआला का ग़ज़ब भड़कता है जब लोग उसके नबी पर ज़ुलम करते हैं, उस के प्यारे पर ज़ुलम करते हैं। लेकिन अल्लाह! यह ज़ुलम जो कर रहे हैं यह लाइलमी और बेवक़ूफ़ी की वजह से कर रहे हैं। उनको बख़श दे। इन पर उनकी ग़लतियों की वजह से अज़ाब नाज़िल नहीं करना।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی آلِ مُحَمَّدٍ۔ क्या शफ़क़त और रहमत का मुज़ाहरा है।

सही बुख़ारी में यह रिवायत इस तरह है। اَنَّ عَبْدَ اللّٰهِ کَاَنِّیْ أَنْظُرُ إِلَی النَّبِیِّ یَحْکِیْ نَبِیًّا مِنَ الْأَنْبِیَاءِ ضَرَبَهٗ قَوْمُهٗ فَأَدْمَوْهُ، وَهُوَ یَمْسَحُ الدَّمَ عَنْ وَجْهِهٖ وَیَقُوْلُ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِقَوْمِیْ فَاِنَّهُمْ لَا یَعْلَمُوْنَ۔

(बुख़ारी किताबुल् हदीस अंबिया, हदीस 3477)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि गोया मैं नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को अब भी देख रहा हूँ कि नबियों में से एक नबी का हाल आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सुना रहे हैं जिसको उसकी क़ौम ने मार-मार

कर लहूलुहान कर दिया था। वह अपने चेहरे से ख़ून पोंछ रहे थे और कहते जाते थे कि हे अल्लाह मेरी क़ौम को बख़श दे क्योंकि वे नहीं जानते।

इस बारे में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में तफ़सील लिखी है कि "दर्रा में पहुंच कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो की मदद से अपने ज़ख़म धोए और जो दो कड़ियाँ आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के रुख़्सार में चुभ कर रह गई थीं वे अबू उबैदा बिन अल् जराह रज़ियल्लाहु अन्हो ने बड़ी मुश्किल से अपने दाँतों के साथ खींच खींच कर बाहर निकालीं यहाँ तक कि इस कोशिश में उनके दो दाँत भी टूट गए। उस वक़्त आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ज़ख़मों से बहुत ख़ून बह रहा था और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम इस ख़ून को देखकर हसरत के साथ फ़रमाते थे। كَيْفَ يُفْلِحُ قَوْمٌ خَضَبُوْا وَجْهَ نَبِيِّهِمْ بِالدَّمِ وَهُوَ يَدْعُوْهُمْ إِلٰى رَبِّهِمْ "किस तरह निजात पाएगी वह क़ौम जिसने अपने नबी के मुँह को उस के ख़ून से रंग दिया। इस जुर्म में कि वह उन्हें ख़ुदा की तरफ़ बुलाता है।" इस के बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम थोड़ी देर के लिए ख़ामोश हो गए और फिर फ़रमाया। اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِقَوْمِيْ فَإِنَّهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ। अर्थात "हे मेरे अल्लाह तू मेरी क़ौम को माफ़ कर दे। क्योंकि उनसे यह क़सूर जहालत और लाइलमी में हुआ है।' रिवायत आती है कि इसी अवसर पर यह क़ुरआन की आयत नाज़िल हुई कि لَيْسَ لَكَ مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ अर्थात अज़ाब और क्षमा का मामला अल्लाह के हाथ में है इस से तुम्हें कोई सरोकार नहीं। ख़ुदा जिसे चाहेगा माफ़ करेगा और जिसे चाहेगा अज़ाब देगा। फिर लिखते हैं कि "फ़ातम अल्ज़ुहरा रज़ियल्लाहु अन्हा जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के विषय में वहशतनाक ख़बरें सुनकर मदीना से निकल आई थीं वह भी थोड़ी देर के बाद उहद में पहुंच गईं और आते ही आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ज़ख़मों को धोना शुरू कर दिया, परंतु ख़ून किसी तरह बंद होने में ही नहीं आता था। आख़िर हज़रत फातमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने चटाई का एक टुकड़ा जला कर उसकी ख़ाक आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ज़ख़म पर बाँधी तब जाकर कहीं ख़ून थमा। दूसरी महिलाओं ने भी इस अवसर पर घायल सहाबियों की ख़िदमत करके सवाब प्राप्त किया।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो एम.ए पृष्ठ 497-498)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् सानी रज़ियल्लाहु अन्हो इस वाक़िया को इस तरह वर्णन फ़रमाते हैं कि "ग़ज़वा उहद के अवसर पर एक पत्थर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के कवच पर आ लगा और इसके कील आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सिर में घुस गए और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बेहोश हो कर उन साहबा रज़ियल्लाहु अन्हो की लाशों पर जा पड़े जो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इर्द गर्द लड़ते हुए शहीद हो चुके थे और इसके बाद कुछ और साहबा रज़ियल्लाहु अन्हो की लाशें आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के जिस्म पवित्र शरीर पर जा गिरीं और लोगों ने यह समझा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मारे जा हैं। मगर जब आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को गढ़े से निकाला गया और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को होश आया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह ख़्याल ही नहीं किया कि दुश्मन ने मुझे घायल किया है। मेरे दाँत तोड़ दिए हैं और मेरे अज़ीज़ों और रिश्तेदारों और दोस्तों को शहीद कर दिया है बल्कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने होश में आते ही दुआ की कि رَبِّ اغْفِرْ لِقَوْمِيْ فَإِنَّهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ! ये लोग मेरे मुक़ाम को शनाख़्त नहीं कर सके इस लिए तू उन को बख़श दे और उनके गुनाहों को माफ़ फ़र्मा दे।"

(तफ़सीर-ए-कबीर भाग 7 पृष्ठ 67-68 ऐडीशन 2004 ई.)

उहद में फ़रिश्तों का हाज़िर होना और उनकी लड़ाई करने के बारे में भी वर्णन मिलता है।

साद बिन अबी वक्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि मैं ने उहद के दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दाएं और बाएं दो आदमी देखे। उन पर सफ़ैद लिबास था। बड़ी सख़्त लड़ाई कर रहे थे। मैं ने उन दोनों को न इस से पहले देखा था और न उस के बाद देखा। अर्थात जिब्राईल अलैहिस्सलाम और मीकाईल अलैहिस्सलाम और इस को बीहक़ी ने रिवायत किया है

फिर मुजाहिद ने रिवायत किया है। फ़रमाते हैं फ़रिश्तों ने सिर्फ बदर के दिन लड़ाई की थी। बीहक़ी कहते हैं कि उनकी मुराद यह है कि जब मुस्लमानों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ना-फ़रमानी की और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दिए गए हुक्म पर सब्र नहीं किया तो उस वक़्त फ़रिश्तों ने लड़ाई नहीं की। यह इशारा दर्रे वालों की तरफ़ है कि जब उन्होंने इताअत का उदाहरण दिखाया और सब्र किया तो फ़रिश्ते हिफ़ाज़त कर रहे थे। जब उन्होंने बेसबरी दिखाई तो फ़रिश्तों ने अपना साया उठा लिया। واللہ اعلم

इस बारे में मुहम्मद बिन उम्र ने अपने शयूख़ से अल्लाह तआला के फ़रमान بَلٰى إِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا के बारे में रिवायत किया है कि उन्होंने सब्र नहीं किया और भाग गए तो उनकी मदद नहीं की गई और उनसे यह भी रिवायत किया गया है कि उनके शयूख़ ने कहा कि मसअब बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हो शहीद हो गए तो मसअब बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हो की शक्ल में एक फ़रिश्ते ने झंडा पकड़ लिया और इस दिन फ़रिश्ते हाज़िर हुए थे लेकिन उन्होंने क़िताल नहीं किया।

हारिस बिन सिम्मा रज़ियल्लाहु अन्हो इन हालात का नक़्शा खींचते हुए फ़रमाते हैं कि उहद के दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम घाटी में थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मुझसे अबदुर्राहमान बिन ओफ़ रज़ियल्लाहु अन्हो के बारे में पूछा तो मैं ने अर्ज़ किया कि मैं ने उनको पहाड़ की जानिब देखा है तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : बेशक फ़रिश्ते उनके साथ क़िताल कर रहे हैं। हारिस रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं फिर मैं अबदुर्राहमान रज़ियल्लाहु अन्हो की तरफ़ लौटा तो मैं ने उनके सामने सात कुफ़्फ़ार को मरे हुए देखा तो मैं ने कहा तेरा दायाँ हाथ कामयाब हो गया। इन सबको आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने क़तल किया है? उन्होंने कहा इस और इस को मैंने क़तल किया है और उन लोगों को ऐसे शख़्स ने क़तल किया है जिसको मैं ने नहीं देखा। तो मैं ने कहा अल्लाह और उस के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमसे सच्च कहा था। अर्थात फ़रिश्ते उनके साथ मिलकर क़िताल कर रहे थे।

इबन-ए-साद ने अब्दुल्लाह बिन फ़ज़ल बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत किया है वह फ़रमाते हैं : उहद के दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मसअब बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हो को झंडा दिया तो मसअब रज़ियल्लाहु अन्हो शहीद हो गए तो इस झंडे को एक फ़रिश्ते ने मसअब की सूरत में पकड़ लिया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाने लगे हे मसअब आगे बढ़ो तो फ़रिश्ते ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तरफ़ मुतवज्जा हो कर कहा मैं मसअब नहीं तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पहचान गए कि यह फ़रिश्ता है इस के ज़रीया आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मदद की गई है।

मुहम्मद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उहद के दिन फ़रमाया : हे मसअब तू आगे बढ़। तो अबदुर्राहमान बिन ओफ़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया हे अल्लाह के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मसअब तो शहीद नहीं कर दिए गए? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : बिल्कुल लेकिन एक फ़रिश्ता उनका क़ायमक़ाम बना है और उनका नाम उसको दे दिया गया है।

अल्लामा इब्ने असाकिर रहमहुल्लाह ने साद बिन अबी वक्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत किया है वह फ़रमाते हैं कि उहद के दिन मैं ने ख़ुद को देखा कि मैं तीर चलाता हूँ और उन तीरों को मेरे पास सफ़ैद कपड़ों वाला ख़ूबसूरत शख़्स वापस ले आता था। मैं उस को नहीं जानता था यहाँ तक कि इस के बाद में गुमान करता था कि वह फ़रिश्ता था।

अमीर बिन इसहाक़ से रिवायत है कि उहद के दिन लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से दूर हो गए और साद रज़ियल्लाहु अन्हो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सामने तीर-अंदाज़ी करते रहे और एक नौजवान उनको तीर उठा कर देता। जब भी तीर फेंकते वह इस को उठा कर ले आता। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : हे अबू इसहाक़! तीर चला। जब जंग से फ़ारिग़ हुए तो नौजवान को कहीं नहीं देखा और न उस को कोई जानता था।

अल्लामा बेहकी रहमहुल्लाह ने उर्वा से अल्लाह तआला के फ़रमान وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ اللّٰهُ وَعْدَهٗ (आल-ए-इमरान : 153) के बारे में रिवायत किया है कि अल्लाह तआला ने उनसे सब्र और तक़्वा पर वादा किया था कि पाँच हज़ार लगातार फ़रिश्तों के ज़रीया उनकी मदद करेंगे और अल्लाह तआला ने ऐसा ही किया लेकिन जब उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के हुक्म की ना-फ़रमानी की और सफ़ों को छोड़ दिया और तीर अंदाज़ों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की इस वसीयत को कि अपनी जगहों से नहीं हटना को छोड़ दिया और दुनिया का इरादा किया तो उनसे फ़रिश्तों की मदद उठा ली और अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल की कि وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ اللّٰهُ وَعْدَهٗ إِذْ تَحُسُّوْنَهُمْ بِإِذْنِهٖ (आल-ए-इमरान : 153) और यक़ीनन अल्लाह ने तुमसे अपना वादा सच्च कर दिखाया जब तुम उसके हुक्म से उनकी बेख़कुनी कर रहे थे तो अल्लाह तआला ने अपना वादा सच्च कर दिखाया और

उनको फ़तह दिखाई लेकिन जब उन्होंने हुक्मअदूली की तो उनको आज़माईश में मुबतला किया।

(सिबलुल् हुदा वल् रिशाद भाग 4 पृष्ठ 205-206 दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे रहमहुल्लाह ने भी अपने एक ख़ुतबा में यह वाक़िया वर्णन किया है कि "सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि जंग-ए-बदर में जो फ़रिश्ते देखे गए उनके सिरों पर स्याह पगड़ियाँ थीं और उनकी एक यूनीफार्म थी। साहबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने जब इन फ़रिश्तों को मुख़्तलिफ़ हालतों में देखा तो इसी तरह स्याह पगड़ियाँ उन्होंने पहनी हुई थीं। जब रिवायतें इकट्ठी हुईं तो वे ताज्जुब में पड़ गए। परंतु जैसा कि आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने مُسَوِّمِيْن की तफ़सीर फ़रमाई थी वैसा ही मुक़द्दर था और वास्तव में ऐसा हुआ। इसी तरह जंग-ए--उहद में जो फ़रिश्ते दिखाई दिए उनके सिरों पर बतौर निशान सुर्ख़ पगड़ियाँ थीं। (दुर्रे-मंसूर ज़ेर-ए-आयत بَلٰٓى اِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا... आल-ए-इमरान : 126)

सुर्ख़-रंग में कुछ ग़ाम का पैग़ाम भी था क्योंकि जितना दुख साहबा रज़ियल्लाहु अन्हो को जंग-ए-उहद में आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ज़ख़्मों की वजह से पहुंचा वैसा दुख आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सारी ज़िंदगी में कभी साहबा रज़ियल्लाहु अन्हो को नहीं पहुंचा। एक ग़ाम के बाद दूसरे ग़ाम की ख़बर उनको मिली और वे ग़मों से निढाल हो गए। अतः इस ग़ज़वा में फ़रिश्तों की अलामत के लिए भी एक ऐसा रंग चुना गया जिसमें ग़ाम और ख़ून और दुख का पहलू शामिल है।"

(ख़ुतबात-ए- ताहिर भाग 2 पृष्ठ 76 ख़ुत्बा जुमा वर्णन फ़र्मूदा 11 फ़रवरी 1983 ई.)

अर्थात सुर्ख़-रंग साहबा रज़ियल्लाहु अन्हो की साबित क़दमी और जाँनिसारी के वाक़ियात भी बहुत हैं। किस तरह उन्होंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हिफ़ाज़त में अपनी जानें क़ुर्बान कीं।

हज़रत अनस बिन नुज़र अन्सारी रज़ियल्लाहु अन्हो के बारे में वर्णन मिलता है। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हो ने वर्णन किया मेरे चचा हज़रत अनस बिन नज़र रज़ियल्लाहु अन्हो बदर की लड़ाई में शरीक नहीं हो सके थे तो उन्होंने अर्ज़ क्या हे रसूलुल्लाह! सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मैं पहली जंग में ग़ैर मौजूद था जो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मुशरिकों से लड़ी। अगर अल्लाह ने मुशरिकों से जंग में मुझे शरीक किया तो फिर अल्लाह भी ज़रूर देख लेगा जो मैं करूँगा। अतः जब उहद का दिन हुआ और मुस्लमान मैदान-ए-जंग से हट गए तो उन्होंने अर्ज़ की हे अल्लाह जो उन्होंने किया है मैं तेरे हुज़ूर उसकी क्षमा चाहता हूँ। उनकी मुराद उनके साथी थी। अर्थात जो मुस्लमान तित्र बित्तर हो गए थे। और फिर कहा कि मैं तेरे हुज़ूर बराअत का इज़हार करता हूँ इस से जो उन्होंने किया। उनकी मुराद मुशरिकीन से थी। फिर वे आगे बढ़े तो हज़रत साद बिन माज़ रज़ियल्लाहु अन्हो उनको सामने से मिले। उन्होंने कहा हे साद बिन माज़ रज़ियल्लाहु अन्हो जन्नत। फिर कहा कि नुज़र के रब की क़सम मैं तो उहद की तरफ़ से इस की ख़ुशबू पा रहा हूँ।

हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ क्या हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फिर जो कुछ उन्होंने क्या मैं न कर सका। जब यह वाक़िया आँहज़रत सल्ल-ल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में वर्णन कर रहे थे तो कहते हैं फिर जिस तरह वे बेधड़क, बे-ख़ौफ़ हो कर लड़े कहते हैं मैं वे नहीं कर सका।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हो ने वर्णन किया हमने उन पर इसी से कुछ ज़ायद तलवार के ज़ख़्म पाए या नेज़े के ज़ख़्म और तीरों के ज़ख़्म और हमने आप रज़िय-ल्लाहु अन्हो को पाया आप रज़ियल्लाहु अन्हो शहीद हो चुके थे और मुशरिकों ने आप रज़ियल्लाहु अन्हो का मुसला किया था। उनको कोई न पहचान सका सिवाए उनकी बहन के। उनकी उंगली के पोरे से उन्होंने उनको पहचाना

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हो ने वर्णन क्या हम समझते थे या यह कहा कि हम-ख़याल करते थे कि यह आयत उनके बारे में और उन जैसे दूसरों के बारे में उतरी कि مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ رِجَالٌ صَدَقُوْا مَا عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَيْهِ (अल् अहज़ाब् : 24) इन मोमिनों में से कुछ लोग ऐसे हैं जिन्हों ने इस वादे को जो उन्होंने अल्लाह से किया था सच्चा कर दिखाया।

(सही अल् बुख़ारी किताब الجهاد والسير باب قول الله تعالىٰ من المؤمنين رجال صدقوا... हदीस 2805)

इब्न-ए-इसहाक़ कहते हैं। अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हो के चचा अनस बिन नज़र रज़ियल्लाहु अन्हो का गुज़र तल्हा बिन उबय दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो और उम्र बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो इत्यादि मुहाझेरीन और अंसार के चंद लोगों के पास हुआ। ये लोग बैठे हुए थे। अनस रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनसे कहा तुम लोग क्यों बैठे हुए हो? उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तो क़तल हो गए। अनस रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा फिर तुम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद ज़िंदा रह कर किया करोगे? जिस तरह उनका इंतेक़ाल हुआ तुम भी इसी तरह मर जाओ। फिर अनस रज़ियल्लाहु अन्हो कुफ़्फ़ार की तरफ़ मुतवज्जा हुए और इस क़दर लड़े कि आख़िर शहीद हो गए। इन्ही के नाम पर अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हो का नाम रखा गया।

अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं उस रोज़ हमने अनस बिन नज़र रज़ियल्लाहु अन्हो को इस हाल में पाया कि उनके जिस्म पर सत्तर ज़ख़्मों के निशान थे और उनकी लाश को कोई नहीं पहचान सका सिवाए उनकी बहन के। उन्होंने उंगलियों के पोरों से उनको पहचाना।

(सीरतुनन्बी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम लेइब्ने हशाम पृष्ठ 535 दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 2001 ई.)

इस बारे में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो यूं लिखते हैं कि :

"उस वक़्त निहायत ख़तरनाक लड़ाई हो रही थी और मुस्लमानों के वास्ते एक सख़्त इबतेला और इमतेहान का वक़्त था और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की शहादत की ख़बर सुनकर बहुत से सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो हिम्मत हार चुके थे और हथियार फेंक कर मैदान से एक तरफ़ हो गए थे। इन्ही में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो भी थे। इसलिए ये लोग इसी तरह मैदान-ए-जंग के एक तरफ़ बैठे थे कि ऊपर से एक सहाबी अनस बिन नज़र अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हो आगए और उन को देखकर कहने लगे। "तुम लोग यहां क्या करते हो?" उन्होंने जवाब दिया। "रसूलुल्लाह सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम ने शहादत पाई। अब लड़ने से क्या हासिल है?"

अनस रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा। यही तो लड़ने का वक़्त है ताकि जो मौत रसूलु-ल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पाई वह हमें भी नसीब हो और फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद ज़िंदगी का भी क्या लुतफ़ है।

फिर उनके सामने साद बिन माज़ रज़ियल्लाहु अन्हो आए तो उन्होंने कहा। "साद मुझे तो इस पहाड़ी से जन्नत की ख़ुशबू आ रही है।" यह कह कर अनस दुश्मन की सफ़ों में घुस गए और लड़ते लड़ते शहीद हुए। जंग के बाद देखा गया ताकि बदन पर इसी से ज़्यादा ज़ख़्म थे और कोई पहचान नहीं सकता था कि यह किस की लाश है। आख़िर उनकी बहन ने उनकी उंगली देखकर शनाख़्त किया।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ा-दा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो एम. ए पृष्ठ 494-495)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी इस बारे में वर्णन फ़रमाया है कि :

"हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हो के चचा जब जंग उहद हुई वे भी इस लड़ाई में शामिल हुए और उन्होंने ख़ूब दाद-ए-शुजाअत दी। ख़ूब लड़े और ख़ूब मुहम्मद सल्ल-ल्लाहो अलैहि व सल्लम को कुफ़्फ़ार के हमलों से बचाया। आख़िर फ़तह हुई और फ़तह के बाद मुस्लमान दुश्मन को क़ैदी बनाने और उस का माल-ओ-अस्बाब जमा करने में मशग़ूल हो गए। नादान दुश्मन उसका नाम लूट मार रखता है।' हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब यह जंग ख़त्म हो गई, माल-ए-ग़नीमत इकट्ठा कर रहे थे तो दुश्मन ने उसका नाम लूट मार रखता है।" हालाँकि यह लूट मार नहीं होती बल्कि दुश्मन को कमज़ोर करने का एक माध्यम होता है। बहरहाल उन्होंने समझा कि अब मेरा फ़र्ज़ पूरा हो गया है। उन्हें भूख लगी हुई थी और चंद खजूरें उनके पास थीं, वह मैदान-ए-जंग से कुछ पीछे हट कर फ़तह की ख़ुशी में टहलने लग गए और खजूरें खाने लगे, खजूरें खाते और टहलते टहलते वह एक तरफ़ आए तो उन्होंने देखा कि एक पत्थर है जिस पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो बैठे हुए रो रहे हैं। वह उनको देखकर हैरान हो गए कि आज तो हँसने का दिन है, ख़ुश होने का दिन है, मु-बारकबादियों का दिन है। ऐसे अवसर पर यह रो क्यों रहे हैं? इसलिए वह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो से मुख़ातब हुए और उन्हें कहा कि मियां! आज तो ख़ुशी का दिन है कि अल्लाह तआला ने मुस्लमानों को फ़तह दी और तुम उस वक़्त रो रहे हो। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा शायद तुम्हें पता नहीं कि फ़तह के बाद क्या हुआ। उन्होंने कहा क्या हुआ? हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा। दुश्मन का लश्कर पीछे से आया और उसने दुबारा हमला कर दिया जिसका नतीजा यह हुआ कि इस्लामी लश्कर तित्र बित्तर हो गया और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम शहीद हो गए। इस अंसारी ने कहा उमर रज़ियल्लाहु अन्हो तो फिर भी यह रोने का कौन सा मुक़ाम है। एक खजूर उनके हाथ में रह गई थी। वह उन्होंने उसी वक़्त फेंक दी और उसे कहा।' अर्थात खजूर को मुख़ातब करके कहा कि "तेरे और मेरे ख़ुदा के मध्य "और बहरहाल उस वक़्त हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को या खजूर को ही कहा होगा कि तेरे और मेरे ख़ुदा के मध्य "सिवाए एक खजूर के और है क्या? फिर उन्होंने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की तरफ़ देखा और कहा उमर रज़ियल्लाहु अन्हो अगर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम शहीद हो गए हैं तो फिर इस दुनिया में हमारा क्या काम है। फिर जहां वे गए हैं वहीं हम भी जाऐंगे। यह कह कर तलवार ली और अकेले ही दुश्मन के लश्कर पर जो हज़ारों की तादाद में था, हमला-आवर हो गए। एक आदमी की हज़ारों के मुक़ाबला में क्या हैसियत होती है। चारों तरफ़ से उन पर हमले

शुरू हो गए और वह वहीं शहीद हो गए। जंग के बाद जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनकी लाश तलाश कराई तो उनके जिस्म के सत्तर टुकड़े मिले बल्कि कुछ रिवायात में आता है कि उनकी लाश पहचानी नहीं जाती थी। आख़िर उंगली के एक निशान के ज़रीया उनकी एक बहन ने या किसी और रिश्तेदार ने उनको पहचान।"

(ख़ुतबात-ए-महमूद भाग 23 पृष्ठ 442 – 443 ख़ुतबा-ए-जुमा वर्णन फ़र्मूदा 9 अक्तूबर 1942 ई.)

फिर दुबारा एक जगह इस वाक़िया को आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने यूं फ़रमाया कि :

"उहद की जंग में जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की शहादत की ख़बर पसिद्ध हुई तो उन्होंने' अर्थात हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हो के चचा ने "हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को एक टीले पर बैठे और रोते हुए देखा तो दरयाफ़त किया कि उम्र रोने की क्या बात है जबकि मुस्लमानों को फ़तह हो गई है? हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने जवाब दिया कि तुम्हें पता नहीं रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम शहीद हो गए हैं।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हो के चचा ने जब यह बात सुनी तो उस वक़्त वह खजूरें खा रहे थे और सिर्फ एक खजूर हाथ में थी उसे उठा कर फेंक दिया और कहा कि मेरे और ख़ुदा के मध्य उसके सिवा और कौन सी रोक है।

और अपने इशक़ के लिहाज़ से हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की तरफ़ हक़ारत से देखा और कहा उम्र जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अगले जहान चले गए तो तुम यहां बैठे क्यों रोते हो? जहां आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम गए वहीं हम चलते हैं और अकेले ही दुश्मन के तीन हज़ार के लश्कर पर हमला कर दिया। कुफ़्फ़ार भी आपको शायद पागल समझते होंगे। आपने लड़ते-लड़ते शहादत पाई और जब जंग के बाद आपकी लाश तलाश करवाई गई तो सत्तर टुकड़े मिले। जोड़ जोड़ अलग हो था।

(ख़ुतबात-ए-महमूद भाग 23 पृष्ठ 373 ख़ुतबा जुमा वर्णन फ़र्मूदा 4 सितंबर 1942 ई.)

उनकी शहादत के वाक़ियात को हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुख़्तलिफ़ जगहों पर तफ़सील के साथ वर्णन फ़रमाया है। कुछ जगह ज़्यादा लंबी तफ़सील से है कुछ जगह कम। एक जगह आप रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि :

"एक हदीस में आता है कि हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हो बिन नज़र एक अंसारी सहाबी जो ग़लती की वजह से जंग बदर में शामिल होने से रह गए थे जब उन्होंने बदरी साहबा रज़ियल्लाहु अन्हो से बदर की जंग के कारनामे सुने तो जोश से उठकर टहलने लग गए और कहने लगे यह क्या बात है। जब मुझे मौक़ा मिला तो मैं बताऊँगा कि मोमिन कैसी क़ुर्बानियां करता है। इसलिए उहद की लड़ाई में वह शामिल हुए और जब पीछे की तरफ़ से यक-दम हमला की वजह से मुस्लमानों के क़दम उखड़ गए और वह मैदान-ए-जंग से हट कर कुछ फ़ासिला तक आगए और रसूले-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अकेले रह गए और कुफ़्फ़ार के पथराओ की वजह से घायल हो कर दूसरे ज़ख़मियों के जिस्मों पर गिर गए और इतने में कुछ और लोग घायल हो कर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर गिर गए और चंद मिनट के बाद लोगों ने आप को ग़ायब देख कर समझ लिया कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम शहीद हो गए हैं तो कुछ लोगों ने दौड़ कर मदीना में जो उहद के क़रीब ही था यह मशहूर कर दिया कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम शहीद हो गए हैं। यह ख़बर उन लोगों पर भी जो मैदान-ए-जंग से सिर्फ थोड़े फ़ासिला पर पीछे थे बिजली की तरह गिरी। उनमें हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो भी थे। वह एक पत्थर पर बैठे हुए रो रहे थे कि अनस रज़ियल्लाहु अन्हो बिन नुज़र जिन्हों ने जंग से पहले खाना नहीं खाया था दो तीन खजूरें खाते हुए उनके पास से गुज़रे। और चूँकि वह उस वक़्त मैदान-ए-जंग से आए थे जबकि मुस्लमान फ़ातेह हो चुके थे और कुफ़्फ़ार शिकस्त खा चुके थे और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो उस वक़्त मैदान-ए-जंग से आए थे जबकि पीछे की तरफ़ से दुश्मन ने दुबारा हमला किया था और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम घायल हो कर गिर गए थे और बाअज़ सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने समझ लिया था कि आप शहीद हो गए हैं इस लिए आप रज़ियल्लाहु अन्हो रो रहे थे" अर्थात हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो उस वक़्त रो रहे थे। "और अनस रज़ियल्लाहु अन्हो ख़ुश थे कि हम को फ़त्हा नसीब हो चुकी है। अतः उन का रोना अनस रज़ियल्लाहु अन्हो को अजीब मालूम हुआ और वह हैरत से हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को देखने लगे और कहने लगे। उमर रज़ियल्लाहु अन्हो यह ख़ुशी का मौक़ा है या रोने का? अल्लाह तआला ने मुस्लमानों को फ़तह दी है हमें तो ख़ुशी मनानी चाहीए। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने सिर उठाकर उनकी तरफ़ देखा और कहा अनस रज़ियल्लाहु अन्हो शायद तुम्हें मालूम नहीं कि बाद में जंग का नक़्शा बदल गया। दुश्मन ने पहाड़ी के पीछे से आकर दुबारा हमला कर दिया और अचानक हमला की ताब न ला कर इस्लामी लश्कर बिखर गया और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम शहीद हो गए।'

उस वक़्त अनस रज़ियल्लाहु अन्हो के हाथ में आख़िरी खजूर थी। उन्होंने खजूर उठा कर ज़मीन पर फेंक दी और कहा मेरे और मेरे महबूब के मध्य सिवाए उस खजूर के और क्या हायल है।

फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को देखा और कहा जो कुछ तुम कहते हो अगर वह सच्च है तो फिर भी रोने का मौक़ा नहीं। हमें भी उधर जाने की तैयारी करनी चाहीए जिधर हमारा महबूब गया है। यह कह कर तलवार मियान से निकाल ली और दुश्मन के झुंड पर जा पड़े।

अकेला आदमी सैंकड़ों आदमियों का क्या मुक़ाबला कर सकता है। थोड़ी ही देर में टुकड़े-टुकड़े हो कर उन का जिस्म ज़मीन पर बिखर गया। और जब ख़ुदा तआला ने फिर मुस्लमानों को ग़लबा दिया और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया अनस रज़ियल्लाहु अन्हो बिन नज़र को तलाश करो। वह कहाँ हैं? तो लोगों ने आकर ख़बर दी कि उनका तो कहीं पता नहीं लगता आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फिर उनकी तलाश का हुक्म दिया। इतने में उनकी बहन मदीना से यह वहशतनाक ख़बर सुनकर कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम शहीद हो गए हैं दौड़ती हुई मैदान-ए-जंग में पहुंची और आख़िर एक जगह पर उस ने एक लाश के टुकड़े देखे। जिन टुकड़ों में से एक उंगली के ज़रीया उसने पहचान लिया कि यह मेरे भाई अनस रज़ियल्लाहु अन्हो की नाश है और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को खबर दी।"

(तफ़सीर-ए-कबीर भाग 7 पृष्ठ 585-586 ऐडीशन 2004 ई.)

[नोट:। तफ़सीर-ए-कबीर के इस हवाला में मालिक बिन अनस रज़ियल्लाहु अन्हो नाम लिखा हुआ है जबकि अहादीस और तारीख़ की किताबों में उनका नाम हज़रत अनस बिन नज़र रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णनीत है। इसलिए यहां असल नाम ही दर्ज किया जा रहा है।

यह था सहाब-ए-रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इशक़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

यह वर्णन अभी चल रहा है। इन शा अल्लाह आइन्दा भी होगा।

आजकल दुआओं में यमन के अहमदियों के लिए भी दुआ करें वे आजकल काफ़ी मुश्किलात में गिरफ़्तार हैं। इसी तरह मुस्लिम उमा के लिए दुआ करें। अल्लाह तआला उनमें भी इकाई और वहदत पैदा करे और अक़ल और समझ दे। दुनिया के उमूमी हालात के लिए भी दुआ करें। बड़ी तेज़ी से जंग की तरफ़ बढ़ रहे है। अल्लाह तआला रहम फ़रमाए।

नमाज़ के बाद मैं दो जनाज़े ग़ायब भी पढ़ाऊंगा पहला जनाज़ा जिसका वर्णन करूँगा वह श्रीमान हाफ़िज़ डाक्टर अब्दुल हमीद गामांगा साहिब नायब अमीर सिएरा लियोन हैं।

यह 13 जनवरी को मुख़्तसर बिमारी के बाद पैंतालीस साल की उम्र में बक़ज़ाए इलाही वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। मरहूम अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मूसी थे।

मूसा मेवा साहिब अमीर जमाअत सिएरा लियोन लिखते हैं कि डाक्टर गामांगा साहिब सिएरा लियोन में सबसे ज़्यादा चंदा वसीयत अदा करने वाले थे। कहते हैं जब ख़ाकसार ने लोगों को नई जलसा-ए-गाह के लिए जगह ख़रीदने और इसके लिए माली मदद की अपील की तो डाक्टर साहिब ने सबसे ज़्यादा रक़म का वादा किया और अपनी वफ़ात से पहले दस हज़ार अमरीकी डालर बतौर डोनेशन अदा किए। डाक्टर साहिब ने नुसरत जहां स्कीम के तहत पाँच साल का वक़्फ़ किया था। नाईजेरिया में उनकी तक़र्ररी हुई थी लेकिन अभी कारवाई हो रही थी। काग़ज़ात मुकम्मल नहीं हुए थे। इस अरसा में उनको हमारे एक पाकिस्तानी डाक्टर के जाने की वजह से फ़्री टाउन के हस्पताल में ही ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली और बहुत मेहनत से उन्होंने वहां काम किया। और इस अरसा के दौरान उनको हस्पताल से अपनी हिस्से की जितनी भी रक़म मिली वह उन्होंने हस्पताल को अतीया कर दी और हस्पताल की तज़यन-ओ-मुरम्मत का काम करवाया। यह रक़म लोकल करंसी में दो लाख लियोन बनते हैं। ख़िलाफ़त से बहुत मुहब्बत थी। उनकी ज़िंदगी का सबसे बड़ा अफ़सोस जिसकी वजह से वह अफ़सोस करते थे यही था कि ख़लीफ़ा वक़्त से मुलाक़ात नहीं हो सकी। मेरे से मुलाक़ात की दो दफ़ा बहुत कोशिश की लेकिन उनको वीज़ा नहीं मिला। मैडीकल सर्विस के दौरान ज़रूरतमंद मरीज़ों का मुफ़्त ईलाज करते थे। कई अहमदी तलबा जिनके माता पिता उनकी कॉलेज की फ़ीस नहीं अदा कर सकते थे डाक्टर साहिब उनकी मदद करते थे। निहायत ईमानदार, मेहनती और दूसरों की मदद करने वाले थे। उनकी शादी हमारे यहां जो टोमी कालवन साहिब हैं उनकी छोटी बहन का दियाता गुमानगा (Kadie Yatta Gamanga) से हुई थी। उनके दो छोटे बच्चे हैं। बेटी तक़रीबन चार वर्ष और एक बेटा दो साल का है। ...

शेष आगे

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 09 Thursday 29-07 March 2024 Issue No. 9-10

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान
में ख़िदमत की इच्छा रखने वाले ध्यान दें

"नज़ारत तालीम" के अंतर्गत शिक्षण संस्थानों में पुरुष शिक्षकों की आवश्यकता है

तालीमुल्-इस्लाम सीनियर सेकेंडरी स्कूल में फ़िज़िकल एजुकेशन और कंप्यूटर टीचर के कुछ पद भरे जाने हैं। इच्छुक उम्मीदवार जिन के पास सेवा की भावना है और अपेक्षित शैक्षणिक योग्यता है, वे नज़ारत दीवान द्वारा प्रकाशित जानकारी फॉर्म भर कर अपना आवेदन जमा करवा सकते हैं। रिक्तियां विवरण एवं शर्तें इस प्रकार हैं।

Computer Teacher :

(1)Qualification : BCA/B.Sc(I.T/C.S/internet Science), B.Tech (I.T/C.S)

(2) अभ्यर्थी उर्दू/अंग्रेज़ी/हिन्दी/पंजाबी कम्पोज़िंग जानता हो। (3) प्रासंगिक विषय में स्नातक (B.C.A/ B.Sc,B.Tech) 55% के साथ, और किसी भी मान्यता प्राप्त संस्थान में 3 वर्षों का अनुभव, स्नातकोत्तर को प्राथमिकता दी जाएगी।

Physical Education Teacher

(1) B.A with Physical Education as an Elective subject / 3 year Graduation Course in Physical Education and B.P.Ed

(2) 4 years Integrated Course of Bachelor of Physical Education from a recognised University

(3) संबंधित विषय में 55% अंक और किसी भी मान्यता प्राप्त संस्थान में 3 वर्षों का अनुभव। पोस्ट ग्रेजुएट को प्राथमिकता दी जाएगी। (4) उम्मीदवार की आयु 20 वर्ष से कम नहीं और 40 वर्ष से अधिक नहीं होनी चाहिए। असाधारण मामलों में आयु सीमा में छूट पर विचार किया जा सकता है। (5) केवल उन्हीं उम्मीदवारों की सलेक्शन पर ध्यान दिया जाएगा जो मरकज़ी कमेटी बराए भर्ती-कारकुनान की ओर से लिए जाने वाले मौखिक और लिखित साक्षात्कार में सफल होंगे और नूर अस्पताल की मेडिकल रिपोर्ट के अनुसार स्वस्थ होंगे। (6) चयन के मामले में, इच्छुक को क़ादियान में अपने आवास की व्यवस्था स्वंय करनी होगी। (7) साक्षात्कार के लिए क़ादियान को बुलाने के मामले में, परिवहन व्यय उम्मीदवार स्वयं उठाएगा। (8) साक्षात्कार की तारीख बाद में अधिसूचित की जाएगी। (9) मुद्रित सूचना फार्म दफ़्तर दीवान या निम्नलि-खित पते / ईमेल द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। (10) आवेदन शैक्षणिक योग्यता और अनुभव की प्रामाणिकताएं (Self Attested) की हुई प्रतिलिपि यह घोषणा होने के दो महीनो के अंदर-अंदर नज़ारत दीवान पहुंच जानी चाहिए। (11) जीवन निर्वाह भत्ता एवं अन्य जानकारी के लिए कार्यालय समय में निम्नलिखित ई-मेल एवं फोन नंबरों पर संपर्क किया जा सकता है।

★ ★ ★

ड्राईवर पद की नियुक्ति के लिए सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान की ओर से घोषणा

(1) अभ्यर्थी की आयु 40 वर्ष से ज़ायद और 18 वर्ष से कम न हो। (2) अभ्यर्थी कम से कम आठवी पास हो। (3) उम्मीदवार के पास कम से कम दस वर्षों का वैध ड्राइविंग लाइसेंस और दस वर्षों का ड्राइविंग अनुभव होना चाहिए। ट्रेंड ड्राइवरों को प्राथमिकता दी जाएगी। (4) अभ्यर्थी चालक को द्वितीय श्रेणी के बराबर भत्ता एवं अन्य सुविधाएं दी जाएंगी। (5) अभ्यर्थी को नूर हस्पताल से मेडिकल जांच क़ुरआन होगी । वही अभ्यर्थी ख़िदमत के योग्य होंगे जो नूर हस्पताल के तिब्बी बोर्ड की रिपोर्ट के मुताबिक़ सेहतमंद और तंदरुस्त होंगे। (7) स्लैक्शन की सूरत में अभ्यर्थी को क़ादियान में अपनी रिहायश का इंतेज़ाम स्वयं करना होगा। (8) क़ादियान आने जाने का सफ़र ख़र्च अभ्यर्थी के अपने ज़िम्मा होंगा।

(नोट : लिखित परीक्षा, ड्राइविंग टेस्ट और इंटरव्यू की तिथि से अभ्यर्थी को बाद में अवगत किया जाएगा।)

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें।

नज़ारत दीवान सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान पिन कोड 143516

मोबाइल : 09682627592, 09682587713,

दफ़्तर01872-501130 E-Mail: diwan@qadian.in

★ ★ ★

Tahir Ahmad Zaheer
M.Sc. (Chemistry) B.Ed.
DIRECTOR
طالب دعا
Tahir Ahmad Zaheer
Director oxford N.T.T.College
Jaipur (Rajasthan)
TEACHER TRAINING

OXFORD N.T.T. COLLEGE
(Teacher Training)
(A unit of Oxford Group of Education)
Affialiated by A.I.I.C.C.E. New Delhi 110001
0141-2615111- 7357615111
oxfordnttcollege@gmail.com
Add. Fateh Tiba Adarsh Nagar, Jaipur-04
Reg. No. AllCCE-0289/Raj.

HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE

اب دیکھتے ہو کیسا رجوع جہاں ہوا اک مرجع خواص یہی قادیاں ہوا
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE
(ہمارا عزم صاف ستھرا کاروبار) (SINCE 1964)
क़ादियान में घर, फ्लैट्स और विल्डिंग उचित कीमत पर निर्माण करवाने के लिए सम्पर्क करें, इसी प्रकार क़ादियान में उचित कीमत पर बने बनाए नए और पुराने घर / फ्लैट्स और ज़मीन ख़रीदने और Renovation के लिए सम्पर्क करें
(PROP: TAHIR AHMAD ASIF)
contact no. : 87279-41071, 83603-14884, 75298-44681
e mail : hussainconstructionsqadian@gmail.com

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad